माघ माह , कृष्ण पक्ष 21 वर्ष, अंक 13 पृष्ठ 8 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शनिवार 05 फरवरी 2022 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

गोरखपुर में सीएम योगी आदित्यनाथ ने भरा पर्चा

इस सीट पर 33 सालों से भाजपा का कब्जा, यूपी में भाजपा फिर 300 के पार: गृह मंत्री

गोरखपुर

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को गोरखपुर सदर सीट से चुनाव लड़ने के लिए पर्चा दाखिल किया। पांच बार से सांसद योगी पहली बार गोरखपुर में शहर सीट से विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं। इस सीट पर 33 सालों से भाजपा का कब्जा है। योगी के नामांकन में खुद गृह मंत्री अमित शाह और यूपी चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान मौजूद रहे। यह पहली बार है, जब शाह किसी के नामांकन में शामिल हुए। नामांकन के बाद अमित शाह गोरक्षनाथ मठ पहुंचे और पूजा-अर्चना की। इस मेगा शो के जरिए भाजपा ने पूर्वांचल में बड़ा मैसेज देने की कोशिश की है। गृह मंत्री ने कहा, 'यूपी की जनता भाजपा के साथ है। इस बार फिर 300 सीट जीतेंगे। विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं है।'

नामांकन से पहले योगी ने की साधना: नामांकन से पहले सीएम योगी ने गोरक्षनाथ मंदिर में हवन-पूजन कर अर्चना की। रुद्राभिषेक कर भगवान शिव से जीत की कामना की। इसके अलावा योगी ने अपने गुरु महंत अवेधनाथ का भी आशीर्वाद लिया। बीजेपी के प्रदेश पदाधिकारियों ने गोरखपुर में डेरा डाल लिया है।

प्रस्तावकों में दिखी सोशल इंजीनियरिंग: योगी के चार प्रस्तावकों में सोशल इंजीनियरिंग देखने को मिली है। चार प्रस्तावकों में दलित, ब्राह्मण, कायस्थ और वैश्य समाज के लोग हैं।

माफिया आजम-अतीक और मुख्तार जेल में ही रहेंगे: इससे पहले महाराणा प्रताप कॉलेज में आयोजित जनसभा में अमित शाह ने कहा, 'योगी के शासन में माफिया जेल में हैं। अतीक अहमद, मुख्तार अंसारी, आजम खान जेल में ही रहेंगे। आज हम योगी का पर्चा भरवाने आए हैं। विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं है।

उनको तो लगता है कोरोना के कारण सभाएं सीमित हो गई हैं, लोगों के बीच जाना नहीं पड़ रहा है। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि भैया जो प्रचार करना है कर लो, उत्तर प्रदेश की जनता भाजपा के साथ है, भाजपा को फिर से 300 के पार सीटें मिलने वाली हैं।' 'उत्तर प्रदेश के इतिहास में फिर से एक बार भाजपा इतिहास दोहराने जा रही है। 2014, 2017 और 2019 तीनों चुनाव में उत्तर प्रदेश की जनता ने पीएम मोदी के नेतृत्व में यूपी के विकास का रास्ता तैयार कर प्रचंड बहुमत दिया है।'

बिना भेदभाव आस्था का सम्मान, सुरक्षा की गारंटी: योगी

योगी आदित्यनाथ ने कहा, '2019 के चुनाव में देश ओर दुनिया के तमाम राजनीतिक विश्लेषक मानते थे कि भाजपा का यूपी में क्या होगा? तब भी अमित शाह कहते थे कि 64-65 से कम नहीं जीतेगी। भाजपा ने यहां 64 सीट जीतकर गठबंधन को फेल कर दिया था। हमने बिना किसी भेदभाव के विकास की परियोजनाओं को आगे बढ़ाया है।' 'यह डबल इंजन के सरकार की बदौलत हो पाया है। नतीजा कोई भी व्यक्ति नकारात्मक टिप्पणी नहीं कर सकता।

हिस्ट्रीशीटर को बनाएं हिस्ट्री: मोदी

उत्तर प्रदेश में इस बार का चुनाव विकास और शांति के स्थायित्व के लिए: प्रधानमंत्री

मेरठ

शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्चुअल माध्यम से जन चौपाल को संबोधित संबोधित किया। जन चौपाल में प्रधानमंत्री को सुनने के लिए लोगों में भारी उत्साह रहा। बड़ी स्क्रीन लगाकर सभी जगह प्रधानमंत्री का भाषण सुनाया गया। लोगों को बैठने के लिए कुर्सियों का इंतजाम भी किया गया। शास्त्रीनगर डी ब्लाक में सरस्वती शिशु मंदिर के प्रांगण में सांसद राजेंद्र अग्रवाल ने भी बैठकर प्रधानमंत्री का भाषण सुना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिना नाम लिए सपा और उसके सहयोगी दलों पर जमकर निशाना साधा। लोगों से भारी मतदान की अपील की। चौधरी चरण सिंह, मेजर ध्यानचंद और राजा महेंद्र सिंह का नाम लिया तो लोगों ने ताली बजाकर स्वागत किया। प्रधानमंत्री ने जैसे ही दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस वे का जिक्र करते हुए कहा कि इस साल का पहला दौरा मेरठ का था। खराब मौसम था सड़क मार्ग से जाना पड़ा। लेकिन एक घण्टे से कम समय मे ही पहुंच गया। यह सबूत है कि भाजपा जो काम शुरू करती है, उसे पूरा करके दिखाती है। जन चौपाल में बैठे कार्यकर्ताओं और लोगों में उत्साह भर गया। हिस्ट्रीशीटर को बाहर रखने की नई हिस्ट्री बनाने के चुनाव की बात पर भी ताली बजी। प्रधानमंत्री ने मेरठ में बनने जा रहे खेल विश्वविधालय के शिलान्यास का जिक्र किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि पहले मेरठ से गाजियाबाद और अलीगढ़ जाने की बात होती थी तो पसीना आ जाता था। कनेक्टिविटी की बात करते हुए कहा कि दिल्ली से मेरठ तक रैपिड रेल प्रोजेक्ट इसे और बेहतर बनाएगा। मेरठ की कैंची और स्पोर्ट्स कारोबार और सशक्त होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि उधोग और व्यापार तभी बढ़ेंगे जब माफिया अपराधी काबू में रहेंगे। ये काम डबल इंजन की सरकार ही कर सकती है। बजट का जिक्र करते हुए कहा कि गरीब, किसान, मध्यम वर्ग के जीवन मे सार्थक बदलाव लाने वाला है। कहा कि गन्ना का बकाया भुगतान पिछली सरकारों से ज्यादा डबल इंजन की सरकार ने किया। गन्ने से एथेनाल बनाने की क्षमता तैयार हो रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोगों से सावधानी पूर्वक मतदान करने की अपील की। कहा कि बन्दूक,चाकू से खेलने वाले लोग पूरी ताकत लगाएंगे कि योगी सरकार न आए। अगर ये थोड़े भी सफल हुए तो ये पहले से ज्यादा बबादी लेकर आएंगे। अपील की कि इन्हें सफल नहीं होने देना है। ऐसी ताकतों को कानून मानने पर मजबूर करना ही होगा। प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में किसान, नौजवान, महिलाओं के उत्थान की बात कही। जन चौपाल को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पांच वर्षों में बिना भेदभाव के युवाओं को नौकरी दी गई। गंगा एक्सप्रेस वे का जिक्र करते हुए कहा कि मेरठ से प्रयागराज की दूरी अब छह घण्टे में तय होगी।

ये चुनाव यूपी के विकास की निरंतरता के लिए: मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आजादी के बाद यूपी ने अनेक चुनाव देखे हैं, अनेक सरकारें बनती-बिगड़ती देखी हैं। लेकिन ये चुनाव सबसे अलग है। ये चुनाव यूपी में शांति के स्थायित्व के लिए है, विकास की निरंतरता के लिए है। प्रशासन में सुशासन के लिए है। उत्तर प्रदेश के लोगों के तेज विकास के लिए है। ये चुनाव सुरक्षा, सम्मान और समृद्धि की पहचान को बनाए रखने के लिए है। ये चुनाव हिस्ट्री शीटर्स को बाहर रखने के लिए है। नई हिस्ट्री बनाने के लिए है। उत्तर प्रदेश में हुए विकास कार्यों को डबल इंजन की सरकार से जोड़ते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि 2017 में भाजपा सरकार बनने के बाद गरीब के घर बनाने की गति कई गुना बढ़ी है। संपर्क और ढांचागत निर्माण की गति भी दोगुनी हुई है। एक-दो शहरों से अब उत्तर प्रदेश के 10 शहरों में मेट्रो पहुंच गई है।

अभी सर्दी से राहत नहीं: हिमाचल में भारी बर्फबारी

नई दिल्ली/शिमला

बारिश ने दिल्ली में ठंड बढ़ा दी। इसके साथ ही दिल्ली में ठंड ने 19 साल का रिकार्ड तोड़ दिया है। मौसम विभाग के मुताबिक साल 2003 के बाद इस साल फरवरी महीने में इतनी ज्यादा सर्दी पड़ रही है। हिमाचल में भी बर्फबारी जारी है। शिमला, कुल्लू-मनाली, लाहौल-स्पीति समेत कई इलाकों में भारी बर्फबारी होगी। पंजाब-हरियाणा में भी बारिश के साथ सर्द हवाएं चलीं, जिसके कारण दोनों राज्यों में तापमान में गिरावट आई। बिहार के लगभग 26 जिलों में बारिश होने के कारण यहां ठंड बढ़ गई है। वहीं, मध्यप्रदेश के भोपाल में भी पारा लुढ़कने से सर्दी बढ़ गई।

एमएसपी के लिए समिति बनाएगी सरकार

5 राज्यों के चुनावों के बाद मार्च में होगा गठन, किसान संघों के प्रतिनिधि, वैज्ञानिक और विशेषज्ञ सदस्य होंगे

नई दिल्ली

भारत सरकार एमएसपी तय करने के लिए समिति बनाएगी। समिति का गठन 5 राज्यों के विधानसभा चुनावों के बाद होगा। कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने राज्यसभा में कहा कि एमएसपी कमेटी में किसान संघों के सदस्य, वैज्ञानिक, विशेषज्ञ और लाभार्थी होंगे। नवंबर 2021 में केंद्र सरकार के तीनों कृषि कानूनों को रद करने के बाद किसान टरढ की मांग पर अड़ गए थे।

पिछले 7 सालों से एमएसपी पर दोगुने दाम दिए: तोमर-नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि 2018-19 से पहले ऐसा कोई प्रावधान नहीं था कि एमएसपी को किसानों के लिए लाभकारी बनाया जाए। स्वामीनाथन समिति की अनुशंसा में भी 14-15 अनुशंसाएं ऐसी थीं जिन्हें जीओएम ने उपयुक्त नहीं पाया। एक अनुसंशा यह भी थी कि एमएसपी पर 50% मुनाफा जोड़कर घोषित किया जाए, इसे नहीं माना गया था। प्रधानमंत्री ने 2018-19 में इसे स्वीकार किया और अब एमएसपी बढ़कर मिल रही है।

दिल्ली में खुलेंगे फिर स्कूल-कॉलेज और जिम

नई दिल्ली

दिल्ली में कोरोना महामारी की पांचवीं लहर के चलते बंद किए गए स्कूल-कॉलेज व अन्य शिक्षण संस्थान और जिम खुल जाएंगे। वहीं रात्रि कर्फ्यू की समयसीमा भी एक घंटे कम की जाएगी। यह फैसला शुक्रवार को हुई दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की बैठक में लिया गया है। इसकी जानकारी दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से दी। मनीष सिसोदिया ने बताया कि दिल्ली में कोरोना अब नियंत्रण में है, इसे देखते हुए आज डीडीएमए की एक बैठक हुई जिसमें सात अहम निर्णय लिए गए हैं। सबसे पहला फैसला दिल्ली के स्कूलों के संबंध में है। सात फरवरी से नवीं से बारहवीं तक के स्कूल खुलेंगे। धीरे-धीरे अब कोविड केस भी कम हो गए हैं और नवीं से बारहवीं तक के बच्चों के वैक्सीनेशन में भी काफी बढ़ोतरी हुई है। ऐसे में अभी तो फिजिकल और ऑनलाइन क्लास दोनों चलेंगे लेकिन अब समय आ गया है कि हम धीरे-धीरे उस ओर बढ़ेंगे जब सिर्फ फिजिकल कक्षाएं चलेंगी, ऑनलाइन की जरूरत नहीं पडेगी। नर्सरी से लेकर आठवीं तक के सभी स्कूल 15 फरवरी से खोले जाएंगे। इसके पहले स्कूलों को सभी तरह की उचित तैयारी करने को कहा गया है।

मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने एक बयान में इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अगर कोई व्यक्ति कार में अकेले है तो वह बिना मास्क लगाए भी यात्रा कर सकेगा। साथ ही रात का कर्फ्यू जारी रखा जाएगा। हालांकि रात का कर्फ्यू 10 की बजाय अब रात 11 बजे से शुरू होगा।

सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए सख्त नियम बनाएगी केंद्र सरकार

नई दिल्ली

देश की केंद्र सरकार सोशल मीडिया पर लगाम लगाने की तैयारी में हैं। इस प्लेटफार्म का धड़ल्ले से दुरुपयोग को देखते हुए सख्त नियम बनाने की बात कही जा रही है। शुक्रवार को राज्यसभा के बजट सत्र में बोलते हुए इलेक्ट्रानिक और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सदन के सदस्यों से सोशल मीडिया पर सख्त नियम बनाने के लिए सहमति मांगी। प्रश्नकाल के दौरान भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता झरना दास बैद्य ने सोशल मीडिया को लेकर सवाल उठाया। जिसके जवाब में मंत्री ने कहा कि अगर सदन की सहमति है, तो हम और भी सख्त सोशल मीडिया नियम बनाने के लिए तैयार हैं।

'गुरु' का कांग्रेस हाईकमान पर अटैक

ऊपर वाले चाहते हैं पंजाब में कमजोर सीएम बने, जो इनकी ताल पर नाचे

चंडीगढ़

पंजाब में सीएम चेहरे की घोषणा से पहले नवजोत सिद्धू ने कांग्रेस हाईकमान पर बड़ा अटैक किया है। सिद्धू ने अमृतसर में कहा कि ऊपर वाले तो चाहते हैं कि कोई कमजोर मुख्यमंत्री हो, जो इनकी ताल पर ता-ता थैय्या नाचे। फिर ऊपर से कहेंगे कि नाच मेरी बुलबुल, पैसा मिलेगा। पहले बांह मरोड़ते हैं और फिर दर्द होने पर छोड़ देते हैं। इसके बाद भीड़ से नारे लगने लगे...'हमारा सीएम कैसा हो, नवजोत सिद्धू जैसा हो।' पंजाब में कांग्रेस 6 फरवरी को सीएम चेहरे की घोषणा करने जा रही है। इसके लिए राहुल गांधी लुधियाना रैली में आ सकते हैं। कांग्रेस में सीएम चेहरे के लिए नवजोत सिद्धू और मौजूदा सीएम चरणजीत चन्नी के बीच मुकाबला चल रहा है।

वर्करों से यह कहा सिद्धू ने: अमृतसर में गुरुवार रात को वर्करों से बातचीत करते हुए सिद्धू ने कहा कि आपको एक ही बात बतानी है। अगर नया पंजाब बनाना है तो यह मुख्यमंत्री के हाथ में होता है। जैसा सीएम होगा, वैसा ही राज्य होगा। इन दो मुख्यमंत्रियों ने 25-30 साल में पंजाब को बर्बाद कर दिया। इस बार मुख्यमंत्री आपको चुनना है। अगर ईमानदार ऊपर बैठा दोगे तो ईमानदारी नीचे तक जाएगी। अगर ऊपर चोर बैठा दिया तो सब गया। याद रखना मेरी बात को। सिद्धू ने सिंगापुर में करप्शन खत्म करने का उदाहरण दिया कि वहां टॉप से कार्रवाई हुई।

'कोविड से मौत: मुआवजे के लिए नियुक्त करें नोडल अधिकारी'

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने कोरोना से हुई मौत पर मुआवजा भुगतान करने में राज्य सरकारों की शिथिलता पर नाराजगी जाहिर की है। कोर्ट ने निर्देश दिया है कि कोरोना से अनाथ हुए बच्चों के साथ मुआवजे के सभी विवरण एक हफ्ते के भीतर राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण को दें। कोर्ट ने सभी योग्य पीड़ितों तक मुआवजा पहुंच सके इसके लिए राज्यों को राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के साथ समन्वय बनाने के लिए एक अधिकारी की नियुक्त करने का भी निर्देश दिया। कोर्ट ने कहा कि ऐसा करना इसलिए जरूरी है क्योंकि मुआवजे का लाभ उन सभी तक पहुंचे जिन्होंने आवेदन नहीं किया है।

सुप्रीम कोर्ट ने पिछले साल कोरोना से हुई हर मौत के लिए 50 हजार रुपये मुआवजे का आदेश दिया था। 04 अक्टूबर 2021 को कोर्ट ने कहा था।

कि मृतक के परिवार को मिलने वाला यह मुआवजा दूसरी कल्याण योजनाओं से अलग होगा। कोर्ट ने दावे के 30 दिनों के भीतर भुगतान करने का निर्देश दिया था।

कोरोना: दूसरे लहर में सबसे अधिक लोग मरे

नई दिल्ली

भारत में कोरोना वायरस से मरने वाले मरीजों की संख्या 5 लाख के पार पहुंच गई है। दुनियाभर में कोरोना से अब तक हुई सबसे ज्यादा मौतों के मामले में भारत तीसरे स्थान पर है। 9.1 लाख मौतों के साथ पहले स्थान पर अमेरिका और दूसरे नंबर पर ब्राजील (6.3 लाख मौतें) है। रूस इस लिस्ट में चौथे स्थान पर है। वहां अब तक 3.33 लाख लोगों ने कोरोना के चलते जान गंवाई है। वर्ल्डोमीटर्स के मुताबिक, भारत में पिछले 24 घंटे में 1,100 मौतें हुई हैं, जिसके बाद मरने वालों की संख्या 5,00,087 पर पहुंच गई है। वहीं, भारत में अब तक 40,005,514 लोग कोरोना से रिकवर हो चुके हैं। भारत में कोरोना से अब तक 4.19 करोड़ लोग संक्रमित हो चुके हैं। फिलहाल 14.35 लाख मरीजों का इलाज चल रहा है।

मौत की रफ्तार पर ब्रेक: देश में कोरोना से मौत का पहला मामला 12 मार्च 2020 को आया था। 2 अक्टूबर 2020 को कोरोना के चलते देश में 1 लाख लोगों की जान चली गई थी। कोरोना की पहली लहर में 1.55 लाख लोगों ने जान गंवाई। यह लहर मई 2020 से जनवरी 2021 तक चली। कोरोना वायरस से दूसरी लहर के दौरान सबसे अधिक मरीजों की मौत हुई थी। भारत कोरोना की दूसरी लहर से करीब 11 महीने तक प्रभावित रहा। इस दौरान 3.24 लाख लोगों की जान गई।

दूसरी लहर के पीक पर एक दिन में औसत 4 हजार तक लोगों की मौत हुई। इसकी तुलना में तीसरी लहर कम भयावह रही है। जनवरी से शुरू हुई इस लहर में अब तक सिर्फ 11,600 मरीजों की जान गई है। इस लिहाज से कहा जा सकता है कि भारत में कोरोना से मरने वालों की संख्या की रफ्तार पहले की तुलना में धीमी हुई है।

देश में महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा मौतें: देश में कोरोना वायरस से मरने वाले की संख्या के मामले में महाराष्ट्र सबसे ऊपर है। यहां अब तक 1.42 लाख मरीजों की मौत हो चुकी है।

सुरक्षा के बीच घुटन में नहीं जीना चाहता: ओवैसी

नई दिल्ली

एआईएमआईएम के अध्यक्ष और सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने उत्तर प्रदेश के हापुड़ में अपने ऊपर हुए हमले को लेकर लोकसभा में बयान दिया। उन्होंने सरकार को चेतावनी दी कि देश का एक वर्ग रैडिकलाइजेशन (चरमपंथ) की तरफ बढ़ रहा है। इतना ही नहीं उन्होंने केंद्र की तरफ से प्रस्तावित की गई जेड सिक्योरिटी लेने से इनकार करते हुए कहा कि उन्हें गोली लगती है तो कबूल होगा, लेकिन सुरक्षा के बीच घुटन में जीना नहीं।

सरकार से क्या रही ओवैसी की अपील?-ओवैसी ने लोकसभा में कहा, "मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि इस तरह की घटना से आपको नुकसान होगा। मैं लोकसभा अध्यक्ष के जरिए सरकार को बताना चाहूंगा कि जिन लोगों ने ये रैडिकलाइजेशन किया है। उन पर आतंक-रोधी यूएपीए क्यों नहीं लगाते हैं। अगर किसी क्रिकेट मैच पर कोई पाकिस्तान की तारीफ करता है तो उस पर यूएपीए लगता है।

खबर संक्षेप

हरीकृष्ण लाल का निधन शिक्षा जगत की अपूरणीय क्षति : ननकेश बाबू

करछना। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ वित्तविहीन गुट की आपात बैठक राजाराम उ.मा. विद्यालय करेहा करछना प्रयागराज मे सम्पन्न हुई। जिसमे संघ के तहसील अध्यक्ष अवधेश श्रीवास्तव के पिता हरीकृष्ण लाल के आकस्मिक निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया गया। ज्ञात हो कि श्री हरीकृष्ण लाल का इलाज पार्वती अस्पताल में चल रहा था। संघ के जिलाध्यक्ष ननकेश बाबू ने स्वर्गीय हरीकृष्ण लाल को कुशल शिक्षाशास्त्री तथा अनुशाशक बताते हुए कहा कि श्री लाल के निधन से शिक्षा जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी वेदना व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की गई कि संकट की इस घड़ी में सम्पूर्ण संघ परिवार उनके साथ खड़ा है। संघ के प्रदेश अध्यक्ष/शिक्षक विधायक मा. लालबिहारी यादव ने अपने शोक संदेश में हरीकृष्ण लाल के आकस्मिक निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त की। बैठक में मण्डल अध्यक्ष अभयराज सिंह, सीताशरण सिंह, फूलचंद्र कन्नौजिया, बुधराम यादव, बालेन्द्र गौतम, गोविंद प्रसाद भूर्तिया, जेपी यादव, रविकरन सिंह, मानसिंह पटेल, सीपी मिश्रा, अमरचंद गुप्ता, सीबी यादव, शिवमोहन पटेल, बीरेंद्र शैलेश, प्रेमचंद, अरविन्द यादव, सर्वेश यादव आदि रहे।

मतदान कार्मिको के प्रशिक्षण का जिलाधिकारी ने लिया जायजा

अखंड भारत संदेश

बिशप जॉनसन स्कूल में चल रहे प्रशिक्षण का दूसरा दिन

प्रशिक्षण कार्यक्रम में निरीक्षण करते जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी श्री संजय कुमार खत्री शुक्रवार को मतदान कार्मिकों के चल रहे प्रशिक्षण के दूसरे दिन बिशप जॉनसन स्कूल पहुंचकर प्रशिक्षण कार्यक्रम का जायजा लिया। उन्होंने मतदान कार्मिकों की उपस्थिति तथा मास्टर टेनरों द्वारा कराये जा रहे प्रशिक्षण की ईवीएम मशीन चलवाकर निरीक्षण किया तथा साथ ही मास्टर टेनरों को निर्देशित किया कि सभी को सही से जानकारी रहे। उन्होंने मतदान कार्मिक/मुख्य विकास अधिकारी से कहा कि सभी मतदान कार्मिकों को वैक्सीन अवश्यक लग जाए। मतदान कार्मिकों की शत-प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित रहे। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी शिपू गिरि, एडीएम प्रशासन हर्षदेव पाण्डेय, डी0डी0ओ0 ए0के0 मौर्य सहित सभी सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सपा उम्मीदवार उज्वल रमण सिंह क्षेत्र के डीहा आदि गावों में किया जनसंपर्क

करछना। विधान सभा क्षेत्र करछना के विभिन्न गावों में समाजवादी पार्टी के के प्रत्याशी करछना विधायक उज्जवल रमण सिंह आगामी विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान क्षेत्र के डीहा, बगरहा, गडैला, सेमरहा, कबरा, अमिलो आदि गावों में घर-घर जाकर लोगों से संपर्क किया और पूर्व में अखिलेश यादव सरकार की उपलब्धियां बताई ।प्रचार के दौरान ग्रामीण महिलाओं में योगी-मोदी सरकार के प्रति बहुत ही नाराजगी जाहिर की क्योंकि उनकी रसोई का बजट मोदी सरकार ने बिगाड़ दिया और कमाई के साधन घट गए इसलिए ग्रामीण महिलाओं में भाजपा सरकार के प्रति बहुत रोष है ।जनसम्पर्क के दौरान बीएसपी छोड़ कर सपा मे आये रंजीत सोनकर, जिला पंचायत सदस्य डॉक्टर विजय बाबू,बीपी सिंह, लल्लन यादव , प्रधान हथसरा शिव गणेश पटेल, कमलेश द्विवेदी प्रमुख प्रतिनिधि करछना ,राजेश यादव,अमित राही पासी ,पुष्कर जी,इंदू यादव के साथ महिलाएं आदि लोग रहे।

विधानसभा चुनाव में ड्यूटी न लगाने के लिए रोजगार सेवकों ने भेजा पत्र

विभिन्न समस्याओं का हवाला देकर किया ड्यूटी करने से इनकार

प्रयागराज। मनरेगा में संविदा पर कार्यरत ग्राम रोजगार सेवकों ने चुनाव ड्यूटी के दौरान उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का हवाला देते हुए विधानसभा चुनाव में ड्यूटी न करने का फैसला लिया है। शुक्रवार को बैठक कर संविदा पर कार्यरत रोजगार सेवकों ने अधिकारियों पर संवेदनहीनता का आरोप लगाया। जनपद के उच्चाधिकारियों के साथ ही चुनाव आयुक्त को सम्बोधित उक्त आशय का पत्र भेजते हुए ग्राम रोजगार सेवक पंचायत मित्र वेलफेयर एसोसिएशन के प्रयागराज जिलाध्यक्ष अरूण यादव ने कहा कि विभिन्न चुनावों में ग्राम रोजगार सेवकों को चुनाव में मनमाने तरीके से जबरन लगा दिया जाता है जबकि न तो उन्हें चुनाव ड्यूटी में कोई पारिश्रमिक मिलता है और न ही ड्यूटी के दौरान उनके साथ घटित किसी अप्रिय घटना पर सामाजिक सुरक्षा(बीमा) का प्राविधान है। ऐसे में अधिकारियों के द्वारा रोजगार सेवकों को चुनाव में लगाना असंवैधानिक ही नहीं बल्कि उनकी संवेदनहीनता का परिचायक भी है। संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश पटेल व मंडल अध्यक्ष विजय चंद्र विश्वकर्मा ने बताया कि चुनाव के दौरान ड्यूटी पर कार्यरत ग्राम रोजगार सेवक अपने मताधिकार का भी प्रयोग नहीं कर पाता है जो कि इस लोकतांत्रिक देश में उसके अधिकारों का हनन है। उन्होंने बताया कि जनपद में विकास खण्ड फूलपुर, सोरांव,सहसों,मेजा, कोरांव सहित अन्य ब्लाक के रोजगार सेवकों की ड्यूटी वर्तमान में सम्बन्धित विधानसभा क्षेत्र में वीडियो सर्विलांस टीम के साथ वीडियो ग्राफी में लगाई गई है। ब्लाक अध्यक्ष फूलपुर नूरुद्दीन हाशमी ने बताया कि पूर्व में संपन्न हुए विधानसभा चुनाव ,लोकसभा व उपचुनाव के साथ ही नगर पंचायत के चुनाव में भी रोजगार सेवक बिना पारिश्रमिक के ड्यूटी कर चुके हैं। वहीं काफी संख्या में रोजगार सेवकों को बीएलओ के काम में भी लगाया गया है। जिला मीडिया प्रभारी हरिओम प्रकाश ने बताया कि उक्त समस्या को लेकर प्रदेश संगठन जल्द ही राज्य निर्वाचन निर्वाचन आयोग में चुनाव आयुक्त से मुलाकात करेगा। मौके पर ब्लाक उपाध्यक्ष फूलपुर संगम लाल यादव, ब्लाक अध्यक्ष प्रतापपुर विष्णु स्वर्णकार, राजीव यादव, पंकज पटेल, अरविंद कुमार बरखंडी, विरेन्द्र कुमार गौतम सहित अन्य रोजगार सेवक मौजूद रहे।

शिक्षा छात्र की बहुमूल्य पूंजी : अनिल

जसरा। शिक्षा के माध्यम से ही हम समाज मे व्याप्त अनेकों कुरुतियों को खत्म कर सकते हैं। इतना ही नहीं शिक्षा के माध्यम से विकास के नये आयाम एवम अनेकों अवसर प्रदान होते हैं उक्त बातें कमला स्मारक इंटर कालेज के प्रबंधक अनिल कुमार विश्वकर्मा शुक्रवार को बलापुर स्थित श्रीमती कमला स्मारक इंटर कालेज मे आयोजित एक सामाजिक कार्यक्रम मे बतौर मुख्य वक्ता बोल रहें थे आगे उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा गरीब, नौजवान, छात्र की असली ताकत होती हैं इसके सहारे ही हम समाज एवम राष्ट्र का भला कर सकते हैं। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या अलका विश्वकर्मा ने बसंत पंचमी के अवसर पर देवी सरस्वती पूजन के साथ शिक्षा के बल पर ही माता -पिता, समाज को गौरवान्वित करने के लिए अनूठा संकल्प लेने के लिए भी प्रेरित की। इस अवसर पर कोरोना संक्रमण से बचने के लिए मास्क, सेनीटाइजर, साबुन आदि का नियमित प्रयोग करने की अपील की गयी। उक्त अवसर पर विद्यालय के शिक्षक सहित अन्य गणमान्य लोगों ने सामाजिक दूरी का पालन करते हुए कार्यक्रम मे सम्मिलित रहें।

आग से 17 आढ़तियों की गाढ़ी कमाई हुई स्वाहा

अखंड भारत संदेश

नवीन मंडी स्थल जसरा में गुरुवार को लगी थी आग

जसरा। नवीन मंडी स्थल जसरा में गुरुवार रात को लगी आग से जहां 17 आढ़तियों की गाढ़ी कमाई पूरी तरह से स्वाहा हो गया, वहीं मंडी सचिव सहित तहसील के अधिकारियों द्वारा लेखपाल को भेजकर मरहम लगाया गया है। नवीन मंडी स्थल जसरा में लगभग चार बार से आग लगने के कारण आढ़तियों का लाखों का नुकसान हो ही जाता है। जांच करने जब तहसील के अधिकारी/कर्मचारी जाते हैं तो ब्यापारियों को कोरा आश्वासन देकर जटकर मामला समाप्त कर दिया जाता है। गुरुवार की लगभग आठ बजे रात अज्ञात कारणों से आग लगने के बाद 17आढ़तियों की कमाई जलकर खाक हो गई। किसी आढ़तिया का एक तो किसी का पांच लाख तक का आग लगने से नुकसान हुआ है। जिसकी भारपाई होना मील का पत्थर साबित हो गया है। वहीं मंडी के आढ़तियों ने बताया कि चार बार से आग के कहर से लोग परेशान हैं। मंडी समिति से इसकी भरपाई कभी नहीं की गई।। हम सब भुक्तभोगी आढ़तिये रोने के अलावा क्या कर सकते हैं। वहीं आग लगने की सूचना पर पहुंचे प्रत्याशी अजय कुमार मुन्ना ने आढ़तियों को ढाढ़स बंधाते हूए मदद का आश्वासन दिया है।

1- क्या कहते हैं मंडी सचिव मंडी समिति के लगभग सोलह आढ़तियों की दूकानें आग से जल गई हैं। मंडी परिषद में ज्यादातर किसानों के लिए योजनाएं हैं। 2019 में एक योजना आढ़तियों के लिए आयी है। इस योजना के तहत जिन आढ़तियों को दूकानें एलाट हैं और उनका रजिस्ट्रेशन हुआ है उन्हें सायद कुछ भारपाई किया जाएगा। इसके लिए डिप्टी डायरेक्टर मंडी को दो तीन दिन में फाइल तैयार करके भेज दी जाएगी।

2- क्या कह रहे हैं हल्का लेखपाल

शुक्रवार की सुबह जली हुई दूकानों की जांच करने गये टीम के साथ हल्का लेखपाल लाल बहादुर सिंह व परमात्मा पांडेय ने जांच करके अफनी आख्या उप जिलाधिकारी बारा को आज सौंप देने की बात कही। आढ़तियों की भरपाई को लेकर लेखपाल लाल बहादुर सिंह ने कहा कि आढ़तियों की भरपाई मंडी परिषद द्वारा किया जाना है।

3- क्या कह रहे आढ़ती संघ के अध्यक्ष

नवीन मंडी स्थल जसरा आढ़ती संघ के अध्यक्ष अजय साहू ने कहा कि मंडी इसे लेकर चार बार आग लग चुकी है। मंडी द्वारा कभी एक भी रुपए की भरपाई नहीं दी गई है। हम सब आढ़तिया बराबर टैक्स भर रहे हैं,लेकिन हम सबके साथ मंडी न्याय नहीं कर रही है जो सरासर गलत है।

4- भुक्तभोगी विष्णू साहू

भैया हमारा तो सब कुछ जलकर स्वाहा हो गया है। लगभग पांच लाख का नुकसान हुआ है। हमारे परिवार का भरण पोषण इसी दूकान से ही चल रही थी। अब आंसू बहाने के अलावा कुछ नहीं बचा है।

5- दूकान में जो भी रहा सब जलकर नष्ट हो गया है। लगभग ढाई लाख रुपए का सामान व बीस हजार नकद रुपए जलकर राख हो गया।

भाजपा-अद के संयुक्त प्रत्याशी वाचस्पति को मिला टिकट

अखंड भारत संदेश

बारा विधानसभा

भ्राजपा से टिकट मिलने के बाद समर्थकों के साथ प्रत्याशी

शंकरगढ़,प्रयागराज। यमुनापार की बारा विधानसभा से भारतीय जनता पार्टी और अपना दल (एस) के संयुक्त प्रत्याशी वाचस्पति को प्रत्याशी बनाया गया है। बीते चुनाव में यह सीट भाजपा के खाते में गई थी और इस पर डा. अजय कुमार ने जीत दर्ज की थी। यमुनापार की 264 बारा विधानसभा से वाचस्पति का टिकट कन्फर्म होने के बाद से चली आ रही गहमागहमी पर भी विराम लग गया है। पिछले पखवारेभर से यह सीट राजनैतिक गलियारे में चर्चा के केंद्र में थी। यहां के सिटिंग एमएलए डा. अजय कुमार ने अपना टिकट कटता देख पहले ही भाजपा से इस्तीफा दे दिया था।

अपना दल (एस) के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजेश पटेल ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि विस चुनाव-2022 के लिए राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के प्रत्याशी के रूप में अद (एस) की सातवीं सूची जारी की गई है, जिसमें पूर्व विधायक वाचस्पति को 264 बारा विधानसभा का प्रत्याशी घोषित किया गया है। फिलहाल भाजपा-अद (एस) का संयुक्त प्रत्याशी घोषित होने के पश्चात आज वाचस्पति ने बारा विधानसभा के कई स्थानों का भ्रमण किया। वैसे तो वाचस्पति के लिए यह क्षेत्र नया है। इस चुनावी माहौल में वाचस्पति ने अपने कुछ समर्थकों के साथ आज क्षेत्र के गौहनिया, जसरा, नारीबारी, जारी आदि जगहों पर जनसंपर्क किया। बताते चलें कि बारा विधानसभा से समाजवादी पार्टी ने अजय कुमार मुन्ना, बहुजन समाज पार्टी से डा. शिव प्रकाश, जनसत्ता दल लोकतांत्रिक (राजा भैया) से रितेश राणा, कांग्रेस से मंजू संत और आम आदमी पार्टी ने कन्हैयालाल सरोज के नाम पर भरोसा जताया है। अब देखना यह है कि भाजपा द्वारा अपनी सीट गठबंधन प्रत्याशी वाचस्पति को सौंपे जाने का क्या रिजल्ट आता है।

भाजपा से त्यागपत्र देने वाले विधायक डा. अजय कुमार की बसपा में इंट्री

शंकरगढ़। बारा विधानसभा के भाजपा विधायक डा. अजय कुमार ने शुक्रवार को बहुजन समाज पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली। शहर के एक व्यवसायिक प्रतिष्ठान में उन्होंने बसपा की सदस्यता ली। इस दौरान मंडल कोआर्डिनेटर समेत तमाम लोग मौजूद रहे। डा. अजय कुमार के साथ सैकड़ों समर्थकों ने भी बसपा का दामन थामा है। बताते चलें कि बीते दिनों बारा विधायक डा. अजय कुमार ने प्रेस कांफ्रेंस कर भाजपा से त्याग पत्र देने की घोषणा की थी। इसके साथ ही उनके बसपा में जाने के कयास लगाए जाने लगे थे। हालांकि जिस समय बारा के भाजपा विधायक डा. अजय कुमार ने भाजपा से इस्तीफा दिया था, उस समय बसपा ने विधानसभा बारा से अपना प्रत्याशी घोषित कर दिया था, ऐसे में राजनैतिक पंडितों को बारा विधायक का इस्तीफा देना हजम नहीं हो रहा था। हालांकि, राजनीति में सबकुछ संभव है। ऊंट किस करवट बैठेगा, यह अंत तक तय नहीं रहता। आज जिस तरह से डा. अजय कुमार ने बसपा की सदस्यता ग्रहण की है, उससे साफ है कि अब बारा विधानसभा से बसपा अपना प्रत्याशी भी बदल सकती है। डा. अजय कुमार के पीआरओ ने बताया कि विधायक ने अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ बीएसपी के मंडल कोआर्डिनेटर अशोक गौतम, जिलाध्यक्ष भंवरा, पूर्व कोआर्डिनेटर राजेश पासी, गुलाब चमार की मौजूदगी में बहुजन समाज पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। उन्होंने बताया कि बहुजन समाज पार्टी की तरफ से उम्मीदवारी की लिस्ट शीघ्र ही जारी की जाएगी, उसी के आधार पर आगे की चुनावी रणनीति तय की जाएगी।

समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए प्रदेश की जनता तैयार : विजमा यादव

प्रतापपुर। जवाहर यादव 'पण्डित' स्मारक महाविद्यालय उग्रसेनपुर में प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र की सपा प्रत्याशी एवं पूर्व विधायक विजमा यादव ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश का हर नौजवान, छात्र छात्राएं, महिलाएं, किसान, बेरोजगार सभी वर्गों ने प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार अखिलेश यादव के नेतृत्व में बनाने के लिए तैयार है ।आप सभी लोगों के स्नेह आशीर्वाद से मुझे सपा ने प्रत्याशी घोषित किया है समाजवादी पार्टी का हर कार्यकर्ता स्वयं विजमा यादव बनकर कोविड नियमों का पालन करते हुए प्रचार अभियान में लग जाएं आप लोगों की जीत सुनिश्चित है ।इस अवसर पर जिला सचिव राकेश यादव, मुलायम सिंह यादव यूथ ब्रिगेड के जिला उपाध्यक्ष अशोक यादव, जिला सचिव यूथ ब्रिगेड जितेंद्र यादव, एडवोकेट जिला सचिव सुशील जायसवाल, विधानसभा अध्यक्ष प्रतापपुर योगेश चंद्र पाल, पूर्व ब्लाक प्रमुख प्रत्याशी फूलपुर हरिश्चंद्र पाल, जिला सचिव संदीप यादव, ब्लॉक सचिव शशि यादव, अजय यादव, बजरंगी पाल अवधेश यादव, सनी यादव, संतोष भवन, विनोद पाल, राधेश्याम भास्कर, चंदन यादव प्रधान, हरकेश पाल, प्रवीण सरोज, गुलशन सरोज, नंद लाल यादव, महेंद्र यादव, पंडा यादव, गिरजा शंकर यादव, डॉ वीरेंद्र यादव, गुड्डू सोनी, कल्लू भारतीय, कमलेश प्रजापति, विजय प्रजापति आदि लोग मौजूद रहे।

बीजेपी मंडल जसरा के दौना मंदिर में किया संगठनात्मक बैठक

जसरा। भारतीय जनता पार्टी मंडल जसरा के दौना मंदिर में संगठनात्मक बैठक का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि विधानसभा प्रभारी राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि सभी पदाधिकारी अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए जनसंपर्क अभियान में लग जाये और अपने प्रत्याशी को भारी बहुमत से जिताने का काम करें। बैठक में उपस्थित जिला मंत्री व चुनाव मंडल प्रभारी जसरा बनाये गए प्रकाश शुक्ला प्रचंड ने कहा कि प्रत्येक मंडल पदाधिकारी को शक्ति केंद्र पर लगाया जाए जिससे की हर शक्ति केंद्र और मजबूत हो बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ला ने किया व संचालन मंडल महामंत्री नीरज केसरवानी ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से पिछड़ा मोर्चा जिलाध्यक्ष सुभाष पटेल,अश्विनी केसरवानी,भूपेंद्र पाठक,सुरेश मिश्रा,ब्रह्मदत्त पाठक,अर्जुन विश्वकर्मा, सुबोध जायसवाल, आशा शुक्ला, वीरेंद्र पाठक, शशिकांत पांडेय, रामसागर द्वेदी, सत्यम केसरवानी, राहुल पाल, शंकर लाल गुप्ता,शिवाकांत तिवारी,विमल श्रीवास्तव, सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

विहिप कार्यकताओं ने जगतगुरु परमहंस का किया स्वागत

सहसों। अयोध्या से प्रयागराज जाते समय गुरुवार को सहसों गोल चौराहे पर जगतगुरु छावनी पीठाधीश्वर आचार्य परमहंस महाराज का विश्व हिंदू परिषद कार्यकताओं ने रोक कर जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर कार्यकताओं ने जगतगुरु का माल्यार्पण करते हुए उनका चरण वंदन किया और उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। जगतगुरु आचार्य परमहंस ने कार्यकताओं का अभिवादन स्वीकार करते हुए कहा कि आज तीर्थराज प्रयाग में हम संतो की प्रेस वार्ता होगी जिसमें भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित करने की एक कमेटी गठन कर प्रेस वार्ता के दौरान चर्चा होगा। जिसमें एक लाख साधु-संतों, धमार्चार्यों द्वारा हस्ताक्षरित प्रार्थना पत्र प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम प्रेषित इस वार्ता में रखा जाएगा तथा उस प्रार्थना पत्र को प्रधानमंत्री तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने कहा यही नहीं मैं भविष्यवाणी करता हूं कि 2024 में समस्त भारत हिन्दू राष्ट्र बन जाएगा और 2027 में भारत अखंड होकर 2029 में भारत में एक भी मुस्लिम समुदाय व ईसाई समुदाय के लोग इस देश में नहीं दिखाई पड़ेंगे। इस अवसर पर प्रमुख रूप से विश्व हिन्दू परिषद के दीपक द्विवेदी, सत्येंद्र मणि, पंकज, संतोष तिवारी, विष्णु द्विवेदी उर्फ स्वामी जी, चंद्रशेखर जी, किशन शुक्ला सहित आदि विहिप कार्यकर्ता रहे।

नहरों में पानी छोड़ने को किसानों ने की विभाग से मांग

अखंड भारत संदेश

सुखी नहर का दृश्य

सोरांव। क्षेत्र की नहरों में पानी नहीं आने से तैयार गेहूं और आलू, मटर आदि फसल की सिंचाई नहीं हो पा रही है। खेतों में पलेवा के समय में भी नहरों में पानी नहीं छोड़ा गया था। जिससे बुवाई पिछड़ गई थी। लेकिन किसी तरह किसानों ने बुआई भी कर ली तो अब सिंचाई के लिए नहरों में पानी नहीं छोड़ा जा रहा है। जिससे तैयार फसल बर्बाद होने के कगार पर हैं। हालांकि पिछले पखवाड़े में बरसात हो जाने के कारण गेहूं की सिंचाई के लिए पहले पानी के सिंचाई की कमी पूरी हो गई थी। लेकिन अब किसानों को सिंचाई के लिए पानी की आवश्यकता है। तो नहरों में पानी नदारत है। जिससे किसानों में सिंचाई विभाग के प्रति आक्रोश व्याप्त है। नहर में पानी नहीं आने से ज्यादातर किसान निजी नलकूपों से सिंचाई करने के लिए मजबूर है।और जिससे किसानों के ऊपर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। सोरांव क्षेत्र के तुलसीपुर माइनर से निकलने वाली नहर में पानी ना आने से नारायणपुर, सराय लाल खातून, अलीपुर, तुलसीपुर, फुलवरिया,सराय भोगी, बाहर सराय, भावापुर, उसरही, भदरी,प्रसादपुर आदि दर्जनों गांवों में हजारों एकड़ भूमि में खेती की जाती है। जिसका सिंचाई का साधन मात्र नहर ही है। लेकिन नहरों में पानी ना आने से किसानों के ऊपर संकट के पहाड़ टूट पड़ा है। लोग अपनी फसल को ट्यूबल से सिंचाई करने और जेब ढीली करने को मजबूर है। इस समय किसानों की तैयार सरसों और आलू की खेती पानी के अभाव में सूख रही है। लेकिन नहरों में पानी ना आने से किसानों में चिंता बढ़ गई है। किसान समर बहादुर पटेल,शंकरलाल पटेल, राजबहादुर, रामगणेश मौर्य, देव कुमार पटेल, देव सरन सरोज, राम सरन सरोज,हरीराम पटेल,आदि दर्जनों किसानों ने नहर में जल्द से जल्द पानी छोड़ने की विभाग से मांग की है। इस बाबत अरुण वीर शर्मा सहायक अभियंता सिंचाई खंड प्रयागराज का कहना है कि 15 फरवरी तक नहरों में पानी छोड़ा जाएगा।

खबर संक्षेप

युवक ने फांसी लगाकर दी जान, मचा रहा कोहराम

नैनी। चाका गांव के शक्तिनगर मोहल्ले में चाऊमीन विक्रेता का शव मिलने से सनसनी फैल गई। शुक्रवार सुबह पड़ोसियों ने उसके शव को कमरे में लटकता देखा था। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतरवाकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। नैनी कोतवाली क्षेत्र के मामा भांजा तालाब निवासी राजेश केसरवानी उर्फ राजन ऊर्फ किसमिस (32) पुत्र मूलचंद केसरवानी की दो शादी हुई थी। पहली पत्नी से उसने लव मैरेज किया था, जो कुछ दिनों बाद उसे छोड़कर चला गई थी। तीन साल पहले उसने दूसरी शादी की थी। दूसरी पत्नी कई माह पहले मायके चली गई थी। जो वापस नहीं लौट रही थी। जिससे वह घर में अकेले रहता था। पिछले कई दिनों से वह परेशान चल रहा था। इन दिनों वह मकान का निमार्ण करवा रहा था। वह दुकान-दुकान चाऊमीन सप्लाई करने का काम करता था। गुरुवार रात वह खाना खाकर अपने कमरे में सोने चला गया। सुबह पड़ोसियों ने अर्द्ध निर्मित मकान में उसके शव को लटकता देखा तो पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने घटना की जानकारी डभांव गांव में दुकान चलाने वाले उसके पिता को दी। रोते विलखते परिजन मौके पर पहुंचे। पुलिस का कहना है कि घरेलू कलह से वह काफी परेशान था। हो सकता हो कि वह परेशान होकर फांसी लगाकर जान दे दी।

मेजा रोड रेलवे स्टेशन का डीआरएम ने किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। दिल्ली-हावड़ा रेल मार्ग के मेजारोड रेलवे स्टेशन पर डीआरएम के औचक निरीक्षण से घंटों हड़कंप का माहौल बना रहा। बता दें कि शुक्रवार सुबह डीआरएम प्रयागराज मोहित चंद्रा के साथ रेलवे से जुड़े आलाधिकारियों का सैलून मेजारोड स्टेशन पहुंचा तो हड़कंप मच गया। डीआर ने औचक निरीक्षण के दौरान अधिकारियों की जमकर क्लास लगाई। स्टेशन परिसर इनमें में गंदगी को देख डीआरएम का पारा सातवें आसमान पर जा पहुंचा और स्टेशन अधीक्षक नीतीश कुमार को खरी खोटी सुना डाली। इस दौरान डीआरएम स्टेशन परिसर का बारीकी से निरीक्षण किया, स्टेशन पर मिली कमियों को देख डीआरएम आग बबूला हो गए और अधीनस्थ अधिकारियों को जमकर लताड़ा फाइलों के रखरखाव, पानी की व्यवस्था स्टेशन परिसर में गंदगी को देख भड़क उठे, उन्होंने अधीनस्थ अधिकारियों को कहां की साप्ताहिक

निरीक्षण के दौरान उपस्थित अधिकारी

मेनू बनाकर विभाग से जुड़े कर्मचारियों को काम सौंपा जाए जिससे कि कोई भी कार्य छूटने न पाए और उस पर बारीकी से नजर रखें। डीआरएम ने चेतावनी देते हुए कहा कि अधिकारी अपनी कार्यशैली में बदलाव लाएं नहीं तो कार्रवाई तय है। निरीक्षण के दौरान सोरांव गांव के उमाशंकर द्विवेदी, माता दुलार उपाध्याय, श्रीनाथ गुप्ता, नीरज शर्मा ने बंद पड़ी ट्रेनों के संचालन हेतु डीआरएम से चलवाने की मांग उठाई। डीआरएम ने जल्द ही बंद ट्रेनों के संचालन हेतु मौजूद लोगों को आश्वस्त किया। इस दौरान आईओडब्ल्यू न्याय प्रिय सिंह, पीडब्लूआई विकास कुमार पाण्डेय, एसएनटी विभाग के अधिकारी भुलेन्द्र कुमार, रेलवे ट्रैफिक इंचार्ज कुमार राकेश, आरपीएफ के दारोगा भारत भूषण तिवारी, हेड कांस्टेबल मुन्ना सिंह यादव, कांस्टेबल प्रवीण कुमार सहित रेलवे विभाग के आला अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

मुंबई से तस्करी कर लाई जा रही बेशकीमती ड्रग्स के साथ एक गिरफ्तार : प्रयागराज। एसटीएफ ने बृहस्पतिवार को साढ़े सात लाख की ड्रग्स के साथ तस्कर अनीस अहमद को गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से 50 ग्राम एमडी पाउडर (खास तरह का नशीला पदार्थ) बरामद किया गया। तस्कर मुंबई से ड्रग्स लाकर प्रदेश के कई जिलों में सप्लाई करता था। अनीस के भाई के खिलाफ लखनऊ में एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज है। पुलिस ने अनीस के भाई को भी नामजद किया है। एसटीएफ की टीम ने बृहस्पतिवार को एक सूचना पर छिवकी रेलवे स्टेशन के पास से महोबा के समदनगर निवासी अनीस अहमद को गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से 50 ग्राम एमडी पाउडर मिला।

भारतीय संस्कृत ही सच्ची राजनीति : स्वामी श्री योगी सत्यम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। भारतीय संस्कृति को ही सच्ची राजनीति कहते हैं। सच्ची राजनीति का अभिप्राय रामराज्य से संबंधित शासन-प्रशासन, न्याय पालिका, व्यापार नीति से है। रामराज्य को अग्रेजी में क्राइस्ट कॉन्सेसनेस कहते हैं। नानक देव जी ने इसी को परब्रह्म का हुकुम कहा है। इस्लाम ने इसी को खुदा का संदेश कहा है। अज्ञानता से पूर्ण रूप से मुक्त आत्मा समय-समय पर अवतार लेकर भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन जीने की प्रायोगिक शिक्षा देते रहे हैं।

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 322 वॉ वर्ष है। अब समय आ गया है कि हम रामराज्य को सुनें, समझें तथा तदानुरूप प्रतिपल जीवन व्यतीत करें। इससे संबंधित वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्रातः काल 7:00 बजे से क्रियायोग आश्रम में स्थित श्री महावतार बाबा वटवृक्ष परिसर में

क्रियायोग की शिक्षा देते स्वामी श्री योगी सत्यम

दिया जायेगा तथा सायं 4:00 बजे से 7:00 बजे तक त्रिवेणी रोड मॉ गंगा के तट पर सेवारत क्रियायोग शिविर में दिया जायेगा। इस कार्यक्रम में वे सभी लोग भाग ले सकते हैं जो स्वयं, परिवार, समाज तथा राष्ट्र के अनुरूप क्रियाकलाप समझना, सीखना तथा सम्पन्न करना चाहते हैं। यह भी अवगत कराना है कि रामराज्य से संबंधित क्रियाकलाप अपनाने पर सभी आधि-व्याधियॉ, अभाव, भय, दुःख तथा विपत्तियॉ स्वतः दूर हो जाती हैं।

न्यूज झरोखा

रोड नहीं तो वोट नहीं, घूंघा के ग्रामीणों ने किया मतदान बहिष्कार का ऐलान,राजनैतिक दलों का गांव में ना घुसने का लगाया बैनर

कोरांव। विकास खण्ड कोरांव के ग्राम पंचायत घूंघा में आजादी के 75 वर्ष बीतने के बावजूद भी काली सड़क, बिजली, पानी की समस्या आदि मूलभूत समस्याओं से त्रस्त गांव वासियों ने विधानसभा चुनाव में सामूहिक रूप से मतदान बहिष्कार करने का निर्णय लिया और पूरे ग्राम पंचायत में बैनर लेकर *रोड नहीं तो वोट नहीं* आदि जैसे नारों के साथ मार्च किया और जिला प्रशासन एवं निर्वाचन आयोग , तहसील प्रशासन आदि का ध्यान आकृष्ट करवाया। पूरे गाँव ने सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि गांव में जब तक काली सड़क, बिजली, पानी की समस्या दूर नहीं कि जाती मतदान का बहिष्कार कर गांव में किसी भी राजनीतिक दल के नेता का प्रवेश वर्जित करने का भी एलान किया गया।

नीलम करवरिया ने मेजा तहसील में किया जनसंपर्क

मेजा रोड। विधान सभा 259 के विधानसभा चुनाव 2022 के भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी नीलम करवरिया द्वारा तहसील मुख्यालय मेजा में अधिवक्ताओं से जनसंपर्क किया गया और प्रत्याशी एवं कार्यकताओं द्वारा भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में वोट कर सहयोग की अपील की गई जनसंपर्क के दौरान भाजपा नेता विजय कांत मिश्र पंकज द्विवेदी राजीव तिवारी कमलेश एडवोकेट अप्पू दुगारी एडवोकेट गिरजा शंकर कुशवाहा नरेंद्र शर्मा एडवोकेट कपिल गुप्ता एडवोकेट अनिल पांडे एडवोकेट राजेंद्र तिवारी एडवोकेट कमलेश पटेल एडवोकेट प्रदीप पांडे व्यापार मंडल संरक्षक नित्यानंद उपाध्याय विधायक के निजी सचिव जितेंद्र शुक्ला एडवोकेट सहित काफी संख्या में अधिवक्ता वरिष्ठ एवं कनिष्ठ उपस्थित रहे कार्यकताओं द्वारा प्रत्याशी के समर्थन में नारेबाजी कर सहयोग का आश्वासन दिया गया जनसंपर्क में अधिवक्ताओं ने गर्मजोशी से प्रत्याशी का जोरदार स्वागत किया।

चेकिंग के दौरान कार से भारी मात्रा में सोना बरामद, आयकर विभाग जांच में जुटा

प्रयागराज। सरायइनायत थाने के सामने शुक्रवार की शाम एक कार से भारी मात्रा में सोना बरामद किया गया। तकरीबन चार सौ ग्राम सोना मिजार्पुर के दो व्यापारियों के पास से बरामद किया गया है। मौके पर सोने से जुड़े आवश्यक कागजात नहीं दिखा पाने के कारण इसकी जानकारी आयकर विभाग को दी गई। आयकर विभाग की टीम मौके पर पहुंचकर तफ्तीश में जुटी हुई थी। शुक्रवार की शाम तकरीबन चार बजे सरायइनायत पुलिस को सूचना मिली कि हंडिया की ओर से आ रही कार में काफी मात्रा में सोना लाया जा रहा है। सूचना पर कार्यकारी मजिस्ट्रेट उड़न दस्ता विधानसभा क्षेत्र फूलपुर बृजेश कुमार ने पुलिस फोर्स के साथ थाने के सामने घेराबंदी कर उक्त कार को रोक लिया। कार की तलाशी ली गई तो कार सवार अनूप सोनी निवासी गनेशगंज, कटरा मिजार्पुर एवं सुनील सोनी निवासी जायसवाल कालोनी भैसहिया टोला कटरा, मिजार्पुर के पास से चार सौ ग्राम सोने के जेवर बरामद हुए। बरामद सोने की कीमत तकरीबन 15 लाख रुपये बताई गई है। आभूषण से संबंधित कागजात मांगने पर दोनों नहीं दिखा सके। कार्यकारी मजिस्ट्रेट बृजेश ने बरामद जेवरात जब्त कर आयकर अधिकारियों को सूचना दी थी। आयकर विभाग की टीम मौके पर पहुंचकर तफ्तीश की।

कार्यालय ग्राम पंचायत बनकट विकास खण्ड सोरांव प्रयागराज
टेण्डर/कोटेशन

महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना अन्तर्गत/निम्नलिखित परियोजनाओं पर निर्माण कार्यों में प्रयोगार्थ सामग्री जैसे:– ईंट, सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू, ईंट गिट्टी इत्यादि की आपूर्ति हेतु 20000 से 100000 तक की सामग्री का कोटेशन तथा रूपया 100001(एक लाख एक रूपया) से ऊपर की सामग्री हेतु अधिकृत आपूर्तिकर्ताओं से जिनके पास पैन सं0 हो मोहर बंद टेण्डर दिनांक 17.11.2021 को पूर्वान्ह 10 बजे से अपराह्न 2 बजे कार्यालय ग्राम पंचायत **बनकट** के टेण्डर बाक्स में आमंत्रित किये जाते हैं जो उसी दिनांक अपराह्न 3 बजे कोटेशनदाता/निविदादाता की उपस्थिति/अनुपस्थिति में गठित निविदा कमेटी के समक्ष खोलकर स्वीकृत प्रदान की जायेगी निविदा प्रपत्र दिनांक 10.11.2021 से 17.11.2021 तक किसी भी कार्य दिवस में प्रात: 10 बजे से अपराह्न 2 बजे तक अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में निविदा प्रपत्र शुल्क नगद जमा कर प्राप्त किये जा सकेगे एवं धनराशि/NSC/FD के रूप में ग्राम पंचायत **बनकट** के पक्ष में स्वीकार की जायेगी।

क्र0	ग्राम पंचायत का नाम	योजना का नाम	कार्यस्थल का विवरण	सामग्री का नाम	लागत (लाख में)	टेण्डर/ कोटेशन
1.	बनकट	मनरेगा	किशोरी लाल के खेत से तालाब तक पक्की नाली निर्माण कार्य	पावर ब्रिक्स, ईंट,सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू इत्यादि	1.90	टेण्डर

श्रीमती उर्मिला देवी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत बनकट
वि0 ख0 सोरांव, प्रयागराज।

अजय यादव
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत बनकट
वि0 ख0 सोरांव, प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत सरांय नन्दन उर्फ समसपुर विकास खण्ड सोरांव प्रयागराज
टेण्डर/कोटेशन

महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना अन्तर्गत/निम्नलिखित परियोजनाओं पर निर्माण कार्यों में प्रयोगार्थ सामग्री जैसे:– ईंट, सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू, ईंट गिट्टी इत्यादि की आपूर्ति हेतु 20000 से 100000 तक की सामग्री का कोटेशन तथा रूपया 100001 (एक लाख एक रूपया) से ऊपर की सामग्री हेतु अधिकृत आपूर्तिकर्ताओं से जिनके पास पैन सं0 हो मोहर बंद टेण्डर दिनांक 17.11.2021 को पूर्वान्ह 10 बजे से अपराह्न 2 बजे कार्यालय ग्राम पंचायत **सरांय नन्दन उर्फ समसपुर** के टेण्डर बाक्स में आमंत्रित किये जाते हैं जो उसी दिनांक अपराह्न 3 बजे कोटेशनदाता/निविदादाता की उपस्थिति/अनुपस्थिति में गठित निविदा कमेटी के समक्ष खोलकर स्वीकृत प्रदान की जायेगी निविदा प्रपत्र दिनांक 10.11.2021 से 17.11.2021 तक किसी भी कार्य दिवस में प्रात: 10 बजे से अपराह्न 2 बजे तक अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में निविदा प्रपत्र शुल्क नगद जमा कर प्राप्त किये जा सकेगे एवं धनराशि /NSC/ FD के रूप में ग्राम पंचायत **सरांय नन्दन उर्फ समसपुर** के पक्ष में स्वीकार की जायेगी।

क्र0	ग्राम पंचायत का नाम	योजना का नाम	कार्यस्थल का विवरण	सामग्री का नाम	लागत (लाख में)	टेण्डर/ कोटेशन
1.	सरांय नन्दन उर्फ समसपुर	मनरेगा	वासुदेव के घर से नाला तक पक्की नाली निर्माण कार्य	पावर ब्रिक्स, ईंट,सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू इत्यादि	2.90	टेण्डर

बाल गोविन्द यादव
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत सरांय नन्दन उर्फ समसपुर
वि0 ख0 सोरांव, प्रयागराज।

अजय यादव
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत सरांय नन्दन उर्फ समसपुर
वि0 ख0 सोरांव, प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत कबरा वि0ख0 करछना प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/ग्राम पंचायत/ टेण्डर/कोटेशन/2022-23/ दिनांक

टेण्डर/कोटेशन

वित्तीय वर्ष 2022–23 में ग्राम पंचायत कबरा विकास खण्ड करछना में कराये जाने वाले विकास मनरेगा, राज्य वित्त/15 वां योजनाअन्तर्गत अद्योलिखित कार्यो के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 05–02–2022 से दिनांक 15–02–2022 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्ते किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत कबरा में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 16–02–2022 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 16–02–2022 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्ते लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	शोखपीट 15 नग, रवनिका कबरा	1.80 लाख	1 माह
2.	शोखपीट 15 नग, कबरा	1.80 लाख	1 माह

(बब्बू लाल)
प्रधान
ग्राम पंचायत कबरा
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

(शिव ओम चौधरी)
ग्राम पंचायत विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत कबरा
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत बिगहियाँ विकास खण्ड सोरांव प्रयागराज
टेण्डर/कोटेशन

महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना अन्तर्गत/निम्नलिखित परियोजनाओं पर निर्माण कार्यों में प्रयोगार्थ सामग्री जैसे:– ईंट, सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू, ईंट गिट्टी इत्यादि की आपूर्ति हेतु 20000 से 100000 तक की सामग्री का कोटेशन तथा रूपया 100001(एक लाख एक रूपया) से ऊपर की सामग्री हेतु अधिकृत आपूर्तिकर्ताओं से जिनके पास पैन सं0 हो मोहर बंद टेण्डर दिनांक 17.11.2021 को पूर्वान्ह 10बजे से अपराह्न 2 बजे कार्यालय ग्राम पंचायत **बिगहियाँ** के टेण्डर बाक्स में आमंत्रित किये जाते हैं जो उसी दिनांक अपराह्न 3 बजे कोटेशनदाता/निविदादाता की उपस्थिति/अनुपस्थिति में गठित निविदा कमेटी के समक्ष खोलकर स्वीकृत प्रदान की जायेगी निविदा प्रपत्र दिनांक 10.11.2021 से 17.11.2021 तक किसी भी कार्य दिवस में प्रात: 10 बजे से अपराह्न 2 बजे तक अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में निविदा प्रपत्र शुल्क नगद जमा कर प्राप्त किये जा सकेगे एवं धनराशि/NSC/FD के रूप में ग्राम पंचायत **बिगहियाँ** के पक्ष में स्वीकार की जायेगी।

क्र0	ग्राम पंचायत का नाम	योजना का नाम	कार्यस्थल का विवरण	सामग्री का नाम	लागत (लाख में)	टेण्डर/ कोटेशन
1.	बिगहियाँ	मनरेगा	नन्द लाल के घर से नाला तक पक्की नाली निर्माण कार्य	पावर ब्रिक्स, ईंट,सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू इत्यादि	0.98	टेण्डर
2.	बिगहियाँ	मनरेगा	यादव बस्ती से गोपाल के खेत तक पक्की नाली निर्माण कार्य	पावर ब्रिक्स, ईंट,सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू इत्यादि	3.34	टेण्डर

श्रीमती मनीषा देवी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत बिगहियाँ
वि0 ख0 सोरांव, प्रयागराज।

अजय यादव
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत बिगहियाँ
वि0 ख0 सोरांव, प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत भिदिउरा विकास खण्ड सोरांव प्रयागराज
टेण्डर/कोटेशन

महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना अन्तर्गत/निम्नलिखित परियोजनाओं पर निर्माण कार्यों में प्रयोगार्थ सामग्री जैसे:– ईंट, सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू, ईंट गिट्टी इत्यादि की आपूर्ति हेतु 20000 से 100000 तक की सामग्री का कोटेशन तथा रूपया 100001(एक लाख एक रूपया) से ऊपर की सामग्री हेतु अधिकृत आपूर्तिकर्ताओं से जिनके पास पैन सं0 हो मोहर बंद टेण्डर दिनांक 17.11.2021 को पूर्वान्ह 10बजे से अपराह्न 2 बजे कार्यालय ग्राम पंचायत **भिदिउरा** के टेण्डर बाक्स में आमंत्रित किये जाते हैं जो उसी दिनांक अपराह्न 3 बजे कोटेशनदाता/निविदादाता की उपस्थिति/अनुपस्थिति में गठित निविदा कमेटी के समक्ष खोलकर स्वीकृत प्रदान की जायेगी निविदा प्रपत्र दिनांक 10.11.2021 से 17.11.2021 तक किसी भी कार्य दिवस में प्रात: 10 बजे से अपराह्न 2 बजे तक अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में निविदा प्रपत्र शुल्क नगद जमा कर प्राप्त किये जा सकेगे एवं धनराशि/NSC/FD के रूप में ग्राम पंचायत **भिदिउरा** के पक्ष में स्वीकार की जायेगी।

क्र0	ग्राम पंचायत का नाम	योजना का नाम	कार्यस्थल का विवरण	सामग्री का नाम	लागत (लाख में)	टेण्डर/ कोटेशन
1.	भिदिउरा	मनरेगा	अरविन्द कुशवाहा के घर से नाला तक पक्की नाली निर्माण कार्य	पावर ब्रिक्स, ईंट,सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू इत्यादि	1.76	टेण्डर
2.	भिदिउरा	मनरेगा	धनराज यादव के घर से हाइवे सम्पर्क मार्ग तक पक्की नाली निर्माण कार्य	पावर ब्रिक्स, ईंट,सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू इत्यादि	2.26	टेण्डर
3.	भिदिउरा	मनरेगा	अंकित मौर्या के घर से नाला तक पक्की नाली निर्माण कार्य	पावर ब्रिक्स, ईंट,सीमेन्ट, मोटी बालू, मझली बालू इत्यादि	1.45	टेण्डर

पवन कुमार
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत भिदिउरा
वि0 ख0 सोरांव, प्रयागराज।

अजय यादव
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत भिदिउरा
वि0 ख0 सोरांव, प्रयागराज

कांग्रेस की अलख जगाने वाला राजपरिवार हुआ बीजेपी के साथ

पूर्व सांसद रत्ना समेत कई कांग्रेस के पूर्व नेता भाजपा का कर रहे प्रचार

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। वैसे तो देश में कई बड़े नेता कांग्रेस का साथ छोड़ चुके हैं। उसमें प्रतापगढ़ का भी नाम उस समय जुड़ गया जब आजादी का अलख जगाने वाला कालाकांकर राजघराने की राजकुमारी रत्ना सिंह भी दो साल पहले कांग्रेस छोड़ दिया और अब वह भाजपा का प्रचार कर रही हैं। इतना ही नहीं, युवक कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष व कांग्रेस का झण्डा उठाने वाले भी इन दिनों भाजपा का प्रचार कर रहे हैं।

आजादी के पूर्व से कांग्रेस की अलख जगाने वाला राज परिवार बीजेपी का दामन वर्षों पहले थाम लिया। जिले के साथ ही रामपुर खास में कभी कांग्रेस के लिए पसीना बहाने वाला राजघराना के साथ कई नेता विस चुनाव में भाजपा के लिए समर्थन मांगते नजर आ रहे हैं। कभी कांग्रेस के साथ कदम से कदम मिला कर चलने वाले के सुर बगावती हो गए हैं। जिले की रामपुर खास की

पूर्व सांसद राजकुमारी रत्ना सिंह।

ओम प्रकाश पाण्डेय गुड्डू।

संजीत तिवारी।

सुधीर तिवारी।

विधान सभा सीट पर बयालिस वर्षों से कांग्रेस का दबदबा कायम है। कभी कदम से कदम मिला कर चलने वाले ही बगावत करने में कोई कसर नही छोड़ रहे है। जिले से कांग्रेस से तीन बार सांसद रह चुकीं राजकुमारी सिंह ने लगभग दो वर्ष पहले ही बीजेपी का दामन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की एक सभा में थाम लिया था। राजकुमारी का परिवार आजादी के पूर्व से ही कांग्रेस के साथ रहा है। राजकुमारी के पिता राजा दिनेश सिहं को भी प्रतापगढ की जनता ने चार बार सांसद बनाया था। कांग्रेस में अच्छे वजूद के चलते चुनाव हारने के बाद में उन्हे मंत्रिमंडल में शामिल किया जाता था। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ओम प्रकाश पाण्डेय उर्फ गुड्डू पाण्डेय ने भी बीजेपी के बैनर तले सांगीपुर ब्लाक से ब्लाक प्रमुख पद का कांग्रेस प्रत्याशी के खिलाफ पिछला चुनाव लड चुके हौ वही युवा यूथ कांग्रेस के जिलाध्यक्ष सुधीर तिवारी व संजीत तिवारी भी कांग्रेस से स्वयं को अलग कर लिया और बीजेपी के सहयोगी दल अपना दल (एस) के साथ हो गए। ये सभी नेता कभी कांग्रेस के लिए क्षेत्र में रात-दिन मेहनत करते नजर आते थे लेकिन अब यही लोग रामपुर खास में कमल खिलाने की कोशिश में जुट गए हैं। अपने हुए बेगाने कांग्रेस प्रत्याशी के विजय रथ को रोकने में सफल होते है या फिर विपक्षियों के हाथ निराशा ही लगती ह? फिलहाल यह तो भविष्य की बात है लेकिन यह बात जरूर है कि अपनो के अलग होने से कहीं न कही कमजोरी तो नजर आने ही लगती है। क्षेत्र में पूर्व राज्य सभा सांसद के साथ विधायिका मोना मिश्न क्षेत्र की जनता के बीच विकास पर वोट मांग रही है। वहीं लोगों की चचाओं पर गौर करे तो पूर्व राज्य सभा सांसद द्वारा बनाया गया रामपुर खास का अभेद्य किला को ढा पाना किसी के बस की बात नही है। लोगों का कहना है यहां सिर्फ विकास के नाम मत दिया जाता है।

अफीम कोठी में नामांकन पत्र भरते कैबिनेट मंत्री मोती सिंह।

समर्थकों को रोकने पर मोती सिंह ने पुलिसजनों को लगाई फटकार

मुहूर्त के हिसाब से 12.37 बजे किया अपना नामांकन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रदेश के कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह शुक्रवार की दोपहर अफीम कोठी में नामांकन करने के लिये पहुंचे थे कि गेट पर ही उनकी पुलिसजनों से समर्थकों के अंदर न जाने देने से तीखी बहस हो गई और उन्होंने जमकर फटकार लगाई। उन्होंने कहा कि चुनाव है या तमाशा, दिमाग खराब है सबका। कानून बता रहे हो, तुम्ही जाके दाखिल कर दो। मोती सिंह का पारा इतना हाई था कि वह उल्टे पांव लौटने लगे तो पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल मौके पर पहुंचे और उन्होंने समझा-बुझाकर मामला शांत कराया, तब उसके बाद मोती सिंह ने मुहूर्त के हिसाब से 12.37 बजे अपना नामांकन चार सेटों में दाखिल किया। उनके व पुलिस से हुए नोंकझोंक का वीडियो वायरल होता रहा। इससे राजनीतिक सरगर्मी बढ़ गई और मंत्री के अनेक समर्थक उनसे मिलने पहुंचने लगे। बाद में मोती सिंह ने इलेक्ट्रानिक मीडिया के पत्रकारों से कहा कि इस बार भी प्रदेश में भाजपा की सरकार बनेगी। नामांकन में उनके साथ अधिवक्ता मानिक सिंह, नंदन सिंह, विनोद पाण्डेय सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

निधन पर जताया गया शोक

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। तहसील परिसर मे अमीन संघ की हुई बैठक मे संग्रह अनुसेवक रामसजीवन वर्मा की आकस्मिक मृत्यु पर शोक सभा का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता नायब तहसीलदार सुप्रिया चतुवेर्दी व संचालन अमीन संघ के जिलाध्यक्ष आशुतोष सिंह ने किया। बैठक मे रामसजीवन वर्मा के द्वारा राजस्व संग्रह मे दिये गये योगदान को अविस्मरणीय ठहराते हुए उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया। इस मौके पर तहसील अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह, गंगाधर पाण्डेय, राजकुमार विश्वकर्मा, राममिलन यादव, उमेश वर्मा आदि रहे।

आरोपियों ने मां बेटी को पीटा

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। आरोपियों द्वारा जबरन छप्पर की दीवार गिराने का विरोध करने पर मां बेटी को आरोपियों ने लाठी-डंडों से पीटकर जख्मी कर दिया और जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किया पीड़ित महिला ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के ठनेपुर गोपापुर गांव की रहने वाली सीता देवी पत्नी राजेन्द्र ने बताया कि शुक्रवार को उसके पड़ोसी तीन लोग एकजुट होकर उसके छप्पर की दीवार को गिराने लगे पीड़िता ने जब इस बात का विरोध किया तो आरोपियों ने उसे मारना पीटना शुरू कर दिया बीच-बचाव करने आई उसकी बेटी पूजा को आरोपियों ने लाठी-डंडे से मारकर जख्मी कर दिया शोर शराबा करने पर मौजूद लोग पहुंचे तो आरोपियों ने गाली गलौज करते हुए जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किया और जान से मारने की धमकी दी पीड़िता ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

लावारिश खड़ी बाइक को पुलिस ने लिया कब्जे में

अखंड भारत संदेश

पट्टी नगर, प्रतापगढ़। बैंक ऑफ बड़ौदा के पास लावारिस अवस्था में एक अपाची गाड़ी खड़ी हुई थी जिसकी सूचना लोगों द्वारा पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस बाइक को कब्जे में लेकर थाने चली आई और जांच पड़ताल में जुटी हुई है। शुक्रवार को यह बाइक बैंक ऑफ बड़ौदा के ठीक सामने खड़ी थी किसी ने पुलिस को सूचना दी उसके बाद पुलिस हरकत में आई है और बाइक को कब्जे में लेकर उसे थाने लेकर चली गई अभी तक बाइक के मालिक का पता नहीं चल सका है।

आलापुर धान क्रय का बेबसाइड बन्द होने से किसान परेशान

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। बुधवार से आलापुर कालाकांकर क्रय केंद्र का जिला मुख्यालय से बेबसाइट बन्द कर दिया गया, जिससे किसान क्रय केंद्र का दिन रात चक्कर लगा रहे हैं। वेबसाइट के बन्द होने से जिन किसानों का फरवरी माह के पहले सप्ताह का टोकन मिला है। अपने अनाज को बेचने के लिए इधर उधर भटक रहे हैं जब कि प्राइवेट गल्ला ब्यापारियों के यहाँ मोटा धान की खरीद साढ़े तेरह सौ रुपया कुंटल व महीन धान सवा सत्तरह सौ रुपया कुंटल में खरीद रहे है। जब कि सरकारी खरीद धान का उन्नीस सौ चालीस रुपया कुंटल है ऐसे में किसानों को अपनी फसल की सही कीमत प्राइवेट दुकानदारों के यहां नही मिल पा रही है। धान का सरकारी रेट दो सौ रुपया कुंटल अधिक है। ऐसे में किसानों को सरकारी क्रय केंद्रों में अपना अनाज बेचना ज्यादा उचित समझ रहे हैं।

डीएम ने नामांकन स्थलों एवं स्टेशनरी पैकेटिंग स्थल का किया निरीक्षण

अधिकारियों को दिये आवश्यक निर्देश

नामांकन स्थल का निरीक्षण करते डीएम डा0 नितिन बंसल।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल व पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने आज विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 एवं उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य के निर्वाचन के सकुशल, शान्तिपूर्ण, निष्पक्ष रूप से सम्पन्न कराने हेतु नामांकन स्थल क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान अफीम कोठी व विकास भवन का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि नामांकन स्थलों पर आने वाले अभ्यर्थियों को कोविड प्रोटोकाल एवं आदर्श आचार संहिता के अनुपालन कराना सुनिश्चित करें। ड्यूटी में लगे अधिकारी, कर्मचारी नामांकन स्थलों की निगरानी निरन्तर करते रहे। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सुनील कुमार शुक्ल भी उपस्थित रहे। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल ने मतदान कार्मिकों को उपलब्ध करायी जाने वाली स्टेशनरी पैकेटिंग स्थल राजकीय इण्टर कालेज का निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय प्रभारी अधिकारी स्टेशनरी/सहायक निबन्धक सहकारिता अरविन्द प्रकाश द्वारा बताया गया कि सातों विधानसभाओं के लिये कुल 3347 बैग तैयार कराये जा रहे हैं। स्टेशनरी बैग सभी सेक्टर एवं जोनल मजिस्टेज्ट को भी उपलब्ध कराया जायेगा जिसका उपयोग आवश्यकता पड़ने पर किया जा सकेगा। सहायक प्रभारी अधिकारी कौशलानन्द द्वारा बताया गया कि आयोग के निर्देश पर इस बार पांच तरह के प्रपत्र प्रथम बार पीठासीन अधिकारियों के प्रयोग हेतु सभी बैग में रखवाये जा रह है। उन्होने बताया कि कुल 30 कर्मचारियों की सहायता से पैकेटिंग का कार्य सुचार रूप से किया जा रहा है। कुछ प्रपत्र अभी प्राप्त नही हुये है एक सप्ताह में सभी पैकेटिंग का कार्य पूर्ण कर लिया जायेगा। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि यह सुनिश्चित कर लें कि किसी भी बैग में मतदान हेतु आवश्यक प्रपत्र कम न रहे और इसकी रेण्डम जांच भी प्रभारी अधिकारी स्वयं कर लें। आयोग द्वारा निर्धारित समस्त प्रपत्र और मतदान सामग्री सभी बैग में अनिवार्य रूप से उपलब्ध करा दी जाये। सभी पीठासीन अधिकारी अपने बैग का भलि भांति सभी सामग्री का मिलान कर लें ताकि मतदान के समय कोई समस्या न उत्पन्न हो। इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार उपस्थित रहे।

चार लोगों ने एमएलसी का खरीदा पर्चा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्र में उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य के निर्वाचन की सूचना जारी कर दी है। उन्होने बताया है कि उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य के निर्वाचन हेतु नामांकन चार फरवरी 2022 से विकास भवन के कक्ष सं0-02 में पूर्वान्ह 11 से अपरान्ह 3 बजे के बीच होगा। नामांकन की अन्तिम तिथि 11 फरवरी 2022 है। 14 फरवरी को नामांकन पत्रों की संवीक्षा तथा 16 फरवरी को अपरान्ह 3 बजे तक अभ्यर्थिता वापस लेने का समय निर्धारित है। मतदान 03 मार्च 2022 को पूर्वान्ह 8 बजे और अपरान्ह 4 बजे के बीच सम्पन्न कराया जायेगा तथा मतगणना 12 मार्च को होगी। नामांकन स्थल विकास भवन कक्ष सं0-02 में आज प्रथम दिन 04 अभ्यर्थियों द्वारा नामांकन पत्र क्रमशः अक्षय प्रताप सिंह जनसत्ता दल, राम दयाल वर्मा सपा, राम लखन चतुवेर्दी आप व अमरावती चतुवेर्दी आप द्वारा नामांकन प्रपत्र लिया गया।

रेलवे स्टेशन पर प्रदर्शन करते पदाधिकारी।

आउटडोर बंद करने के फरमान पर यूनियन का विरोध प्रदर्शन

स्टेशन पर जमकर नारेबाजी एसएस को ज्ञापन सौंपा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। डिप्टी एसएस के पद को समाप्त कर आउटडोर दफ्तर को बंद करने के सीनियर डीओएम लखनऊ मंडल के निर्देश की मुखालफत करते हुये नॉर्दर्न रेलवे मेंस यूनियन शाखा प्रतापगढ़ ने शुक्रवार को विरोध प्रदर्शन और नारेबाजी की। प्रतापगढ़ स्टेशन के प्लेटफार्म एक पर एसएस दफ्तर के सामने हुई सभा में मंत्री अनिल शुक्ला ने कहा कि सीनियर डीओएम आउटडोर डिप्टी एसएस दफ्तर को बंद करवा रहें हैं। इस आशय का आदेश उनके द्वारा मिला है। यूनियन इसका पुरजोर विरोध करती है। उन्होंने तर्क दिया कि बिना रेलवे बोर्ड की अनुमति के दिया गया अधिकारी का यह आदेश सुरक्षा और संरक्षा के लिहाज से कहीं से भी उचित नहीं है। प्रतापगढ़ स्टेशन पर अन्य स्टेशनों से अधिक कार्य है। इसलिए यूनियन मांग करती है कि दफ्तर को बंद न किया जाये। इसके बाद एसएस एसके यादव से मंत्रणा के बाद यूनियन ने इस आशय का ज्ञापन उन्हें सौंपा। एसएस ने बताया कि ज्ञापन सीनियर डीओएम को भेज दिया जायेगा। गौरतलब है कि वर्तमान परिवेश में यूनियनें कर्मचारी हित में कुछ खास नहीं कर पा रही हैं। अधिकारियों की तरफ से मांगों को खास तवज्जो न देने की वजह इनके अस्तित्व को हासिये पर लाने का काम कर रहा है। हालांकि नेता मंडली कहीं से भी कमजोर नहीं होना चाहती है। लेकिन जब कर्मचारियों की समस्याओं का हल ही न निकले तो काहे की नेतागिरी और यूनियन। अब आउटडोर का मुद्दा उठा है। अधिकारी के मूड की बात है। शमीम अहमद, अजय आनंद, डीके शर्मा, एके मिश्रा, ओपी राव, मोहम्मद अनीश, संजय डोंगरा, अमित पांडेय, मोहम्मद आरिफ समेत कई लोग मौजूद थे।

बहन बेटियों की सुरक्षा को लेकर योगी सरकार विफलः मोना

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सूबे की कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने प्रदेश की भाजपा सरकार को महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र मे पूरी तरह से असफल व कमजोर करार दिया है। वहीं उन्होने कहा कि मौजूदा भाजपा सरकार बहन और बेटियों की हिफाजत तक करने मे असफल साबित हुई है। शुक्रवार को स्थानीय कैम्प कार्यालय पर मीडिया से रूबरू कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि भाजपा ने सत्ता संभालने के बाद युवाओं को रोजगार दिलाने का दिवा स्वप्न दिखाया था। सरकार के इस कार्यकाल के बीतने पर युवाओं को सरकारी रोजगार तक मुहैया नही हो सका बदले मे अपनी आवाज बुलंद कर रहे नौजवानो को पुलिस की लाठी जरूर खानी पड़ी है। उन्होनें आगरा, लखीमपुर खीरी, प्रयागराज आदि जिलो मे महिलाओं व बेटियों के साथ दुष्कर्म तथा उनकी बर्बर हत्याओं का जिक्र करते हुए योगी सरकार पर तगड़ा हमला बोला कि सिर्फ बेटियों को बढ़ाने का नारा लगाने वाली सरकार बेटियों पर जुल्म रोकने का एक भी कदम नही उठा सकी। उन्होंने कहा कि हालात यह है कि मुख्यमंत्री प्रदेश को अपराध मुक्त बनाने का चुनावी राग अलाप रहे है और इसके ठीक विपरीत सीएम के गृह जनपद मे अवैध हथियारों की सप्लाई सामने नजर आती है।

आराधना मिश्रा मोना।

सात को नामांकन करेंगी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कांग्रेस विधानमंडल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना सात फरवरी को सुबह 11 से साढे.ग्यारह बजे के बीच नामांकन करेंगी। रामपुर खास से आराधना मिश्र कांग्रेस की प्रत्याशी हैं तथा कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी की बेटी है।

मोटर फेल, कॉलोनी में गहराया पानी का संकट, यूनियन नाराज

डीआरएम के कहने के बाद भी नहीं बना पम्प

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। न्यू रेलवे कॉलोनी में सप्ताह भर से छाया पानी का संकट समाप्त होने के बजाय गहराता ही जा रहा है। डीआरएम के कहने पर भी नहीं मिल पा रहा पानी। रेल कर्मचारियों में आक्रोश है।बिजली विभाग के रवैये से यूनियनें खफा हैं। नई रेलवे कॉलोनी के क्वार्टरों में रह रहे कर्मचारियों को दस नंबर पंम्प से पानी की आपूर्ति होती है। बताया जाता है कि करीब सप्ताह भर से कर्मचारियों के क्वार्टरों के नल सूखे हैं। पानी नहीं आ रहा है। दो दिन पहले निरीक्षण पर आये डीआरएम एसके सपरा से उरकू के नेता एसए अंसारी ने इसकी शिकायत की थी। मामले में गंभीरता दिखाते हुये डीआरएम ने एसएसई बिजली संजय यादव और आईओडब्ल्यू पाल को आमने सामने बुलाया। पता चला कि मोटर की समस्या है। डीआरएम ने तत्काल निदान करने को कहा। साथ ही 15 फरवरी तक समस्या को जड़ से समाप्त करने का निर्देश दिया था। निर्देश के अनुपालन में डीआरएम के जाते ही नई मोटर आई। लेकिन उसकी क्षमता जाने बिना बिजली वालों ने बोरिंग में डाल दी। 17 हॉर्स पावर की जगह 22 पावर की मोटर डाल दी। जब चली तो जमीन के अंदर पूरी बोरिंग हिल गई।

संदिग्ध दशा मे फंदे से लटकता मिला युवक का शव, घर में मचा कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली अंतर्गत डीहमेंहदी बाबूगंज के मादीपुर मे घर के पास के बाग में एक पेड़ से शुक्रवार सुबह गांव निवासी विजय सरोज उर्फ गुड्डू (32) पुत्र पंडोही सरोज का शव आम के पेड़ पर फांसी के फंदे से लटकता मिला। शुक्रवार की सुबह शौच को निकले कुछ ग्रामीणों ने शव को आम के पेड़ पर फंदे से लटकते देखा तो आवाक रह गये। ग्रामीणों की चीख पर स्वजन भी मौके पर पहुंचे और शव को देख रोने बिलखने लगे। हालांकि मृतक की मौत अभी भी रहस्यमय है। वहीं स्वजन युवक की हत्या कर शव को फांसी के फंदे से लटका देने का आरोप लगा रहे हैं। सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर घटना की छानबीन में जुट गई। वहीं पुलिस ने परिजनो के आक्रोश को किसी तरह शांत कराकर शव को पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया।

डीहमेंहदी गांव निवासी पन्डोही सरोज के दो पुत्र विजय कुमार सरोज व सन्त लाल सरोज है। मृतक शुक्रवार रात लगभग साढ़े आठ बजे सगरा सुन्दरपुर पहुंचा सगरा सुन्दरपुर से वाहन न मिलने पर पैदल घर जाने को निकल पड़ा चन्दापुर गांव पहुंचने पर परिजनों को फोन कर बताया कि रास्ते में कुछ अज्ञात व्यक्ति हमारे पीछे लगे हैं। घर से किसी को हमारे पास भेज दो नही तो उक्त अज्ञात व्यक्ति हमारे साथ अनहोनी कर सकते है। परिजनो ने विजय के फोन पर बात सुनकर फोरन घर से चन्दापुर के लिए निकले पर चन्दापुर तक रास्ते में कही विजय कुमार नही मिला। परिजनों ने इसकी जानकारी लालगंज पुलिस को भी दी थी। पुलिस ने विजय कुमार के मोबाइल पर सम्पर्क करना चाहा पर विजय का मोबाईल स्विफ आफ मिला। हालांकि रात भर पुलिस व परिजनो ने विजय की तलाश किया पर उसका कोई पता नही चल सका। सुबह जब गांव के लोग शोच को निकले तो गांव के बगल बाग में आम के पेड़ पर शव लटका देख कर गांव वालों ने परिजनों को घटना की जानकारी दी। मृतक की पत्नी अंजू देवी का रो-रो कर बुरा हाल है। वहीं मासूम बेटी राधिका 07 आरिका 05 अनिका 03 भी स्तब्ध आंखों से पिता का शव निहारते दिखे। कोतवाल कमलेश पाल का कहना है कि शव पीएम के लिए भेजा गया है, रिर्पोट आने के बाद कार्रवाई की जाएगी।

खबर संक्षेप

गांजा के साथ तीन अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना चरवा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त कृष्णा प्रसाद उर्फ किशन लाल पुत्र गरीबदास निवासी रतगहा थाना चरवा को 500 ग्राम नाजायज गाजा व बबलू यादव पुत्र खडक सिंह निवासी बरोलहा थाना चरवा को 750 ग्राम नाजायज गाजा के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा अभियुक्त अरविन्द कुमार पुत्र स्व० ज्ञान चन्द्र निवासी मनौरी बाजार थाना पिपरी को मनौरी पुल के पास रेलवे क्रासिंग के पास से 300 ग्राम नाजायज गाजा के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

बम के साथ गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा अभियुक्त राज कुमार पुत्र स्व० रामविलास पटेल निवासी मादपुर थाना पूरामुफ्ती जनपद प्रयागराज को मनौरी ओवरब्रिज के पास से समय 01 अदद देशी जिन्दा बम के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

कंकाल मिलने से मची सनसनी, सूचना पर पहुंचे सीओ

काफी पुराना कंकाल के गले मे कपड़ा भी लिपटा रहा, गला घोट कर हत्या किए जाने की आशंका

कंकाल मिलने की सूचना पर मौके की जांच पड़ताल करती पुलिस

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। कड़ा धाम थाना क्षेत्र के गवर्नमेंट गर्ल्स इंटर कालेज फसैय्या तालाब के पास जंगल मे सड़क से कुछ दूर नर कंकाल मिलने से सनसनी मच गयी सूचना पर थाना प्रभारी कड़ा धाम सीओ सिराथू ने मौका मुआयना किया है कंकाल काफी पुराना समझ आ रहा है कंकाल के गले मे कपड़ा भी लिपटा देखा गया वहीं स्थानीय निवासियों प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार पास में ही श्मसान है कुत्ते घूमते रहते हैं हो सकता है किसी कब्र से कुत्तों ने कंकाल को बाहर निकाल लिया हो बहरहाल कुछ और वजह भी हो सकती है सीओ सिराथू योगेंद्र कृष्ण नारायण ने कहा है पंचायत नामा भरकर नियमानुसार विधिक कार्रवाई करवाई जा रही है इलाके में लावारिस लाशों का मिलना नहीं बंद हो रहा है और पुलिस लावारिस लाशों के मिलने में गंभीर नहीं है पूर्व में भी तमाम लावारिस लाश और नर कंकाल मिल चुके हैं इनका खुलासा करने में पुलिस फिसड्डी साबित हुई है।

आभूषण दुकान में दिनदहाड़े टप्पे बाजी

टप्पे बाजी की जानकारी के बाद मौके पर लगी भीड़

कौशांबी। कोखराज थाना के अंतर्गत हरारायपुर चौराहे पर एक आभूषण की दुकान में दिन दहाड़े टप्पे बाजी कर बाइक सवार फरार हो गए है मामले की सूचना व्यापारी ने स्थानीय पुलिस को दी है। घटनास्थल पर पहुंचकर पुलिस सीसीटीवी कैमरे की फुटेज खंगाल रही है व्यापारी का कहना है कि लगभग ढाई लाख कीमत का सामान टप्पेबाज ले उड़े हैं। जानकारी के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के हरारायपुर चौराहे पर दिनेश सोनी की दुकान पर आभूषण खरीदने के बहाने दो युवक पहुँचे और बातों ही बातों में दुकानदार को उलझा कर सोने के जेवर के डिब्बे ले उड़े दुकानदार का कहना है कि लगभग 60 ग्राम सोने की झुमकी की डिबिया को लेकर युवक फरार हो गए है दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरा के आधार पर देखा गया तो पता चला कि बदमाश बाइक से आए थे और बाइक पर सवार होकर इमामगंज की ओर भाग गए है दुकानदार का कहना है कि टप्पे बाजी करने वाले युवक बाहरी लगते थे और दुकानदार का कहना है कि सामान खरीदने के बहाने दुकान में घुसे टप्पे बाजो ने 500 रुपए भी दुकानदार को दिया है और वार्ता के दौरान टप्पेबाजो ने दुकानदार से बताया कि वह पीडब्ल्यूडी में ठेकेदारी का कार्य करते हैं।

शराब के साथ पांच अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना करारी पुलिस बल द्वारा अभियुक्ता फूलमती पत्नी स्व० रोशनपासी निवासी म्योहर थाना करारी को गिरफ्तार कर कब्जे से 15 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्ता का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा अभियुक्त सोनी सेन पुत्र रमेश चन्द्र निवासी मवई थाना सराय अंकिल को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व मन्नू पुत्र स्व० इन्द्रपाल मोहिउद्दीनपुर देवछार थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व बृजेश कुमार उर्फ सोनू सोनी पुत्र त्रिभुवन नाथ सोनी निवासी बहुगरा थाना सराय अकिल को गिरफ्तार कर कब्जे से 15 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना चरवा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त नेवीलाल पासी पुत्र मुन्नी लाल निवासी तलरी मजरा सैयद सरावा थाना चरवा को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

गलत तरीके से निमार्णाधीन शवदाह गृह पर ग्रामीणों के विरोध पर निर्माण रुका

आक्रोशित ग्रामीणों से वार्ता करते डिप्टी सीएम पुत्र

अखंड भारत संदेश

कोखराज कौशाम्बी। सिराथू तहसील ग्राम ककोढा कशिया गलत तरीके से स्थान चयनित करके बनाया जा रहा था जिसका ग्रामीणों ने डटकर विरोध किया मामले की शिकायत डिप्टी सीएम के परिजन तक पहुंची जिस पर डिप्टी सीएम के परिजनों ने भी हस्तक्षेप किया वही गलत स्थान पर सौदा के बनाए जाने का विरोध कर ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से भी शिकायत की थी जिलाधिकारी ने भी ग्रामीणों की बातों को सुनने के अधीनस्थों को निर्देश दिया शवदाहगृह का निर्माण दो विद्यालय के बीच मे हो रहा था जिसका सीधा असर स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के भविष्य पर पड़ता जिस पर बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखकर शवदाहगृह के निर्माण का ग्रामीणों ने विरोध किया डिप्टी सीएम के पुत्र योगेश मौर्य से ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं को रखा जिस पर तत्काल जिलाधिकारी से बात कर आबादी व स्कूल से दूर शवदाहगृह बनवाने को कहा गया वही पर इस को निरस्तीकरण कर दूसरे जगह पर प्रस्ताव कर निर्माण के लिए निर्देशित किया गया जिस पर योगेश मौर्य व डिप्टी सीएम जिन्दाबाद के नारे भी ग्रामीणों ने लगाया इस मौके पर पंचम लाल ग्राम प्रधान सहित सैकड़ों ग्रामीणों की मौजूदगी रही।

अनुपस्थित मतदान कार्मिकों के विरूद्ध दर्ज की जाए एफआईआर

दोनों पालियों को मिलाकर कुल 17 मतदान कार्मिक अनुपस्थित रहे

कौशाम्बी। विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु आज तीसरे दिन भी एमवी कान्वेट स्कूल एवं कालेज ओसा में मास्टर ट्रेनरों द्वारा मतदान कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण दो पालियों में आयोजित किया गया, जिसमें प्रथम पाली में-780 प्रथम मतदान अधिकारी एवं द्वितीय पाली में-150 माइक्रो आब्जर्वर को प्रशिक्षण दिया जाना था किन्तु दोनों पालियों को मिलाकर कुल 17 मतदान कार्मिक अनुपस्थित रहे, जिसमें 11 माइक्रो आब्जर्वर एवं 06 प्रथम मतदान अधिकारी सम्मिलित हैं प्रभारी अधिकारी कार्मिक ने अनुपस्थित मतदान कार्मिकों के विरूद्ध एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिये है।

राजनैतिक दलों से ठगे गए ब्राह्मणों ने एकता का दिया संदेश

सिराथू तहसील क्षेत्र के मलाक पीजरी गांव में सर्व समाज ने भरी हुंकार

अखंड भारत संदेश

ब्राह्मण एकता बैठक में मंचासीन नेता

कौशांबी। सत्ता के लालची नेताओं द्वारा हमेशा ब्राह्मण समुदाय का उपयोग वोट बैंक के रूप में किया जाता रहा है लेकिन चुनाव जीतने के बाद जनप्रतिनिधियों द्वारा हमेशा ब्राह्मण समाज की उपेक्षा की गई है जिससे ब्राह्मण समाज में जबरदस्त आक्रोश व्याप्त है और इसी आक्रोश के तहत सिराथू तहसील के मलाक पीजरी गांव के देवता भवन में राम चंद्र पांडेय के नेतृत्व में ग्राम देवता ब्राह्मण सभा का आयोजन किया गया है जिसमें सर्व समाज के हजारों लोगों ने उपस्थित होकर समर्थन की हुंकार भरी है। जिले के तीनों विधानसभा से हजारों लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए सनातन सेना परशुराम राम सेना अखिल भारतीय ब्राह्मण सभा एवं राष्ट्रीय ब्राह्मण ग्राम देवता संघ के पदाधिकारियों ने अपने अपने विचार प्रकट करते हुए समय-समय पर राजनीतिक दलों के नेताओं के छलावे की चर्चा कर धोखेबाज राजनैतिक दलों का डटकर विरोध करने का निर्णय किया है जिससे विधानसभा चुनाव 2022 में कई प्रत्याशियों की मुसीबतें बढ़ सकती है कार्यक्रम में मनोज दुबे अभय नारायण पांडे राजेंद्र त्रिपाठी बृजेश मिश्रा ऋषभ मिश्रा प्रभु शंकर शुक्ला महेंद्र मिश्रा बद्री विशाल बालेंद्र धर मिश्रीलाल पांडेय श्रवण शुक्ला सहित तमाम दिग्गज ब्राह्मण नेता शामिल रहे।

कोरोना संक्रमण के दृष्टिगत की गई कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद मे लाकडाउन के दृष्टिगत सरकार द्वारा निर्गत निदेर्शों के अनुपालन के क्रम में पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने एवं सोशल डिस्टेसिंग का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया, जिनमें 105 वाहनों का ई चालान किया गया।

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना सराय अंकिल पुलिस बल द्वारा वाछित अभियुक्त विकास कुमार पुत्र शिवलाल निवासी कटनी थाना सराय अकिल को अभियुक्त के घर के पास से गिरफ्तार केर विधिक कार्यवाही के पक्षात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना सैनी पुलिस बल द्वारा वाछित अभियुक्त अवनीश पुत्र शिवलाल निवासी शाखा थाना सैनी को बस स्टैंड सैनी से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

कड़ा उर्स में शहर काजी द्वारा निशुल्क मेडिकल कैंप का होगा आयोजन

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। हजरत ख्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतुल्लाहि अलैह के 727वें उर्स के मौके पर शहर काजी मुफ्ती खुशनूद आलम एहसानी साहब के द्वारा 5,6 फरवरी सुबह 10 से शाम 5 बजे तक दरगाह ख्वाजा कड़क शाह अब्दाल सुल्तानपुर ख्वाजा कड़क,कड़ा तहसील सिराथू में नीःशुल्क मेडिकल कैंप का आयोजन किया जाएगा ! इस कैंप की अध्यक्षता हाफि ज राहत खान रजवी करेंगे।ये मेडिकल शिविर समाज सेवी संस्था शैखे मिल्लत मिशन टीम के बैनर के नीचे किया जाएगा।

संस्था के सदस्य मुफ्ती मोहम्मद साजिद कादरी ने कहा कि हमारा प्रयास है की लोगों की सेवा के माध्यम से इस्लाम के प्यार का संदेश फैलाना जाए, और इसी मिशन के अंतर्गत हमने दिसंबर से गरीबों और असहाय लोगों में कपड़े पत्येक रविवार बांटने का काम शुरू किया था जो आज भी जारी है। इंशाअल्लाह यह जारी रहेगा। मीडिया से बात करते हुए शहर काजी के पुत्र मौलाना मोहम्मद मियां कादरी सिद्दीकी ने कहा की हजरत ख्वाजा कड़क शाह अब्दाल ने पूरी आयु दीन और समाज की सेवा की थी इसीलिए आज उनके देहांत को 700 साल हो गए मगर उनसे प्रेम करने वाले लोगों की गिनती काम नहीं हुई और न होगी। उन्होंने बताया कि इस मौके पर मोहम्मद आमिर हाफि ज जहीर मोहम्मद राशिद मोहम्मद उमर हाफि ज मोहम्मद शाहनवाज मोहम्मद गुम्फरान मोहम्मद नदीम डॉक्टर मोबीन डॉक्टर इस्तिखार आदि मौजूद रहेंगे।

भाजपा का एक बड़ा नेता पार्टी से बगावत कर बहुजन समाज पार्टी में हो सकता शामिल

कौशांबी। चायल विधानसभा क्षेत्र के एक बड़े भाजपा नेता ने पार्टी से बगावत का मन बना लिया है भारतीय जनता पार्टी ने चायल विधानसभा सीट अपना दल के खाते में डाल दी है और अपना दल ने नागेंद्र सिंह पटेल को प्रत्याशी घोषित कर दिया है जिससे भारतीय जनता पार्टी के नेताओं में पार्टी के प्रति गहरा आक्रोश है और इसी आक्रोश के चलते अपना दल प्रत्याशी को करारी शिकस्त देने के मकसद से भाजपा के एक बड़े नेता बहुजन समाज पार्टी के संपर्क में है और जल्द ही बहुजन समाज पार्टी की सदस्यता लेकर वह बसपा में शामिल हो सकते हैं यदि भाजपा के इस बड़े नेता ने भाजपा से बगावत कर बसपा की सदस्यता ग्रहण कर ली तो अपना दल प्रत्याशी चायल की राह कठिन होगी।

मौत बनकर थाना कोखराज के चौराहे में घूम रहा छुट्टा सांड

थाने के बाहर घूमता छुट्टा सांड

अखंड भारत संदेश

कोखराज कौशाम्बी। सिराथू तहसील के कोखराज थाना के चौराहे पर एक सांड कई महीने से छुट्टा घूम रहा है इस साड़ के हमले से कई लोग लहूलुहान हो चुके हैं लोगों को चहेट चहेट कर मारता है जिसकी शिकायत तमाम राहगीर महिलायें ने थाना कोखराज से लेकर पशु पालन विभाग को अवगत भी कराया अभी दो दिन पहले थाना के दरोगा मोहम्मद जमील व भोला राम व सब्जी विक्रेता को सोते समय साड ने पटक कर मारा जब तक ग्रामीण दौडते सब्जी विक्रेता का पैर टूट गया लेकिन अभी तक मौत रुपी सांड को किसी भी गौ शाला के कर्मचारी व अधिकारियों ने संज्ञान नही लिया जिससे अपनी फरियाद लेकर थाने आने वाले लोगो को मौत का भय दिखने लगता है जबकि थाना सर्किल व क्षेत्र के ग्रामिणो की तरफ से अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए मौत बनकर घूम रहे छुट्टा सांड को पकड़ कर गौ शाला भेजने का ग्रामीणों ने कई बार गुहार लगाई है।

अपना दल प्रत्याशी के आने से चायल विधानसभा में टूटा भाजपाइयों का उत्साह

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। विधानसभा चुनाव 2022 में चायल विधानसभा सीट को भाजपा गठबंधन ने अपना दल यस के खाते में डाल दी है और अपना दल एस ने चायल विधानसभा से नागेंद्र सिंह पटेल को प्रत्याशी घोषित कर दिया है। अपना दल प्रत्याशी के घोषित होते ही चायल विधानसभा के भाजपा कार्यकताओं पदाधिकारियों आम जनता और मतदाताओं के बीच उत्साह कम होता दिखाई पड़ रहा है जिन लोगों को भाजपा से प्रेम था हिंदुत्व का प्रेम था भाजपा प्रत्याशी के बजाय अपना दल के प्रत्याशी आते ही उनका उत्साह कम हो गया है। चायल विधानसभा में भाजपा कार्यकताओं पदाधिकारियों आम जनता और मतदाताओं के कम उत्साह का खामियाजा प्रत्याशी को भुगतना पड़ सकता है। अपना दल ने चायल विधानसभा से जिसे प्रत्याशी घोषित किया है वह पार्टी के नेताओं के लिए भले ही बेहतर प्रत्याशी साबित हो लेकिन सच्चाई यह है कि आम जनता के बीच प्रत्याशी की पहचान लगाव अपना पन और पकड़ नहीं है अनजान चेहरे को मतदाता पसंद नहीं कर रहे हैं अब चुनाव प्रचार के दौरान प्रत्याशी अनजान चेहरे के बीच कितनी पकड़ बना पाते हैं यह तो भविष्य के गर्त में है।

युवा मोर्चा द्वारा केंद्रीय कार्यालय में विकास की उड़ान कार्यक्रम का हुआ आयोजन

उपमुख्यमंत्री के नामांकन के बाद पार्टी में शामिल होने वालों का लगा तांता, सैकडों जनप्रतिनिधि हुए शामिल, कई शामिल होने की फिराक में

अखंड भारत संदेश

युवा मोर्चा के कार्यक्रम में अन्य दल से आए नेताओं का स्वागत करते डिप्टी सीएम व उपस्थित लोग

अझुवा कौशाम्बी। भारतीय जनता पार्टी के विधान सभा केंद्रीय चुनाव कार्यालय में शुक्रवार सुबह भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा द्वारा बिकास की उड़ान कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य प्रत्यासी सिराथू विधानसभा शामिल रहे। इसी कार्यक्रम में स्थानीय प्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों, राजनीतिज्ञों को उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने भारतीय जनता पार्टी की विधिवत सदस्यता दिलाई है। जिला पंचायत सदस्य सुनीता निषाद नगर पंचायत अझुवा के पूर्व चेयरमैन वरिष्ठ नेता ओमप्रकाश कुशवाहा, वर्तमान चेयरमैन अनिल कुमार निर्मल सिराथू विधान सभा के टाण्डा प्रधान सतीश के अलावा डेढ़ दर्जन प्रधान आधा दर्जन क्षेत्र पंचायत सदस्य एवम अझुवा के बड़े समाजसेवियों को भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सदस्यता ग्रहण कराने के बाद शुभकामनाएं देते हुए कहा भारतीय जनता पार्टी में एक बूथ अध्यक्ष पन्ना प्रमुख भी प्रदेश अध्यक्ष बन सकता है उसके समर्पण कार्य को देखकर ही उच्च पदों पर पहुंच सकता है ये सिर्फ भारतीय जनता पार्टी में हो सकता सभी लोगों के सहयोग से कौशाम्बी जनपद की तीनों सीटों पर भाजपा सहयोगी दल के प्रत्यासी विजयी होंगे आज भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में 171 अति सम्मानित लोगों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है बहुत लोग भाजपा सदस्यता ग्रहण को तैयार हैं।

तमंचा कारतूस के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा अभियुक्त राम कृपाल पुत्र राम सजीवन निवासी उमरवल थाना पिपरी को ज्वालादेवी स्कूल ग्राम टिकरा बिगहरा के पास से एक अदद तमंचा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

सार्वजनिक स्थान पर जुआ खेलते अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना पिपरी पुलिस द्वारा चार अभियुक्तों रमेन्द्र सिंह पुत्र बजरंज सिंह आकाश सिंह पुत्र संतोष सिंह निवासीगण बेगमपुर थाना पूरामुफ्ती जनपद प्रयागराज व मोनू सिंह चौहान पुत्र दुखराज शशि कुमार उर्फ आर्यन पुत्र राजू भारतीय निवासीगण शाहा उर्फ पिपलगांव थाना धूमनगंज प्रयागराज को सार्वजनिक स्थान पर हार-जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते हुये गिरफ्तार कर इनके कब्जे से 52 अदद तास के पत्ते व 1960 रुपए मालफड तथा जमातलासी के दौरान 220 रुपए बरामद कर कार्यवाही की गई है।

मौलाना द्वारा चिकित्सा शिविर का किया गया उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

727 वें उर्स के मौके पर किया गया आयोजन

इमामगंज कौशाम्बी। आज हजरत ख्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहा०(अल्लाह उन पर रहम करे) के 727वें उर्स के मौके पर जमीयत उलेमा जिला कौशाम्बी के अध्यक्ष मौलाना मुफ्ती मुहम्मद मुरशिद कासमी द्वारा चिकित्सा शिविर का उद्घाटन किया गया। जमीयत उलमा जिला कौशाम्बी ने 727वें उर्स हजरत ख्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहा० के जायरीन के लिए निःशुल्क चिकित्सा शिविर शुरू किया और मुफ्ती मुहम्मद मुरशिद कासमी ने कहा कि हमारा प्रयास लोगों की सेवा के माध्यम से इस्लाम के प्यार का संदेश फैलाना है, और इस मिशन के तहत हमने पिछले साल तीर्थ यात्रियों की सेवा के लिए एक मुफ्त चिकित्सा शिविर शुरू किया था, और इंशाअल्लाह यह जारी रहेगा । और उन्होंने उम्मीद जताई कि साथ चलने से नफरत और लोगों के दिलों से दूरी खत्म हो जाएगी। इस मौके पर जमीयत उलेमा के अध्यक्ष मुफ्ती मुहम्मद मुरशिद कासमी, मौलाना ऐजाज नादवी सिकरेटरी, दरगाह के मुतवल्ली वली अशरफ , डॉक्टर मुहम्मद राशिद,सय्याद इरफान मेंहदी, मौलाना अब्दुल्लाह नदवी आदि लोग मौजूद रहे।

संपादक की कलम से

प्रकृति की मार

कोरोना के संकट के बीच भारत पर प्रकृति की एक और मार पिछले साल देखने को मिली। पिछले साल कई राज्यों में आपदा की घटनाएं देखने को मिलीं। पर्वतीय स्थलों के साथ मैदानी इलाकों में भी कुदरत का कहर जमकर बरपा। मौसम विभाग की सालाना रिपोर्ट बता रही है कि देश में पिछले साल मौसम संबंधी आपदाओं में बढ़ोतरी हुई है। साल 2021 में असामान्य मौसमी घटनाओं के कारण जो आपदाएं आईं, उनमें दो हजार से ज्यादा लोगों की जान गई। बड़ी संख्या में लोग बेघर हुए। अरबों की संपत्ति का नुकसान हुआ। यह कोई नई बात नहीं है। यह तो हर साल का सिलसिला है। पर इन घटनाओं को प्राकृतिक कारण मान कर भुलाया दिया जाता रहा है। मान कर चला जाता है कि ज्यादा बारिश होगी तो बाढ़ भी आएगी, भूस्खलन भी होगा, तेज गर्मी पड़ेगी और पानी नहीं बरसेगा तो सूखा भी पड़ेगा। बेमौसम की बारिश दूसरी तरह के संकट खड़े करेगी। पर आज जब हम विज्ञान के युग में जी रहे हैं और तमाम वैज्ञानिक साधन-उपकरण हमारे पास हैं, समय-समय पर मौसम संबंधी भविष्यवाणियां हमें खतरों से आगाह करती रहती हैं तो फिर हम क्यों नहीं सचेत होते? प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान को कम करने के उपायों, आपदाओं को जन्म देने वाली मानवीय गतिविधियों पर रोक लगाने जैसे मुद्दों पर क्यों नहीं विचार करते? हाल में मौसम विभाग की सालाना रिपोर्ट ने एक बार फिर उन कारणों को सामने रखा है, जिनकी वजह से हमें प्रकृति का कोपभाजन बनना पड़ता है। रिपोर्ट बता रही है कि गुजरा साल यानी 2021 पिछले 121 सालों में सबसे ज्यादा गर्म रहा। इससे भी ज्यादा चौंकाने वाली बात यह कि 120 साल में जो सबसे ज्यादा ग्यारह गर्म साल रहे, वे 2007 से 2021 के बीच रहे। जाहिर है, भारतीय उपमहाद्वीप के वातावरण में गर्मी बढ़ी है। यह आने वाले समय में बड़े खतरे का संकेत है। इसलिए हमें अभी से ऐसा करना होगा जिससे इस सदी के अंत तक तापमान में वृद्धि को रोका जा सके। वरना प्राकृतिक आपदाएं और विकराल रूप धारण कर कहर बरपाएंगी। हालांकि धरती का औसत तापमान भी बढ़ रहा है।

अर्थव्यवस्था को मजबूती देने वाला संतुलित बजट

-योगेश कुमार गोयल-

सबसे लंबा बजट भाषण देने, परम्परा में बदलाव और पेपरलेस बजट जैसे कई रिकॉर्ड कायम करने के बाद वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने वित्त वर्ष 2022-23 के लिए एक फरवरी को अपना चौथा आम बजट पेश किया।

यह बजट मोदी सरकार का दसवां और केन्द्र सरकार के मौजूदा कार्यकाल का चौथा बजट था। इस बजट पर पूरे देश की नजरें केन्द्रित थी क्योंकि आम आदमी को इस बजट से ढ़ेर सारी उम्मीदें थी। दरअसल माना जा रहा था कि पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के मद्देनजर बजट में आम जनता के लिए राहतों का पिटारा खोला जाएगा लेकिन आमजन को बजट से निराशा ही हाथ लगी है।

हालांकि बजट में रेलवे से लेकर कृषि तथा सड़क-परिवहन से लेकर रक्षा क्षेत्र के लिए कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई हैं लेकिन आम लोगों के हाथ कुछ खास नहीं आया है। इस बजट में युवाओं के लिए 60 लाख नौकरियों के लिए अवसर तैयार करने का वादा तो किया गया है लेकिन बेरोजगारी तथा महंगाई को लेकर कोई ठोस घोषणा नजर नहीं आती। सत्तारूढ़ दल से जुड़े लोग जहां इसे 'आत्मनिर्भर भारत का बजट' करार दे रहे हैं और वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने केन्द्रीय बजट को अमृत काल के अगले 25 वर्षों का ब्लू प्रिंट बताया है, वहीं समूचा विपक्ष आम बजट की

आलोचना करते हुए इसे बेहद निराशाजनक करार दे रहा है। हालांकि कुछ आर्थिक जानकारों का यही मानना है कुल मिलाकर यह एक संतुलित बजट है।

इस बार के बजट से लोगों की उम्मीदें इसलिए भी ज्यादा थी क्योंकि पांच राज्यों में चुनावी प्रक्रिया शुरू हो रही है और इसलिए माना जा रहा था कि बजट पर कहीं न कहीं चुनावी छाप अवश्य दिखाई देगी लेकिन वास्तव में ऐसा कुछ नहीं हुआ। दरअसल गत वर्ष पश्चिम बंगाल सहित पांच राज्यों के चुनावों से पहले पेश बजट में कई बड़ी-बड़ी परियोजनाओं की घोषणा हुई थी। वैसे जानकारों का मानना है कि चूंकि विगत डेढ़ दशकों में बजट पेश करने के बाद कुल 42 बार राज्यों के चुनाव हुए लेकिन हर बार सत्तारूढ़ दल को बजट में लोकलुभावन घोषणाएं करने के बाद भी चुनावों में उसका लाभ नहीं मिला। संभवतः इसी को देखते हुए इस बार के बजट में आसन्न विधानसभा चुनावों की छाया नहीं दिखाई दी। पिछले 15 वर्षों में बजट के बाद उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, पश्चिम बंगाल, असम, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल, पुडुचेरी, मणिपुर, गोवा, उड़ीसा, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश इत्यादि राज्यों में चुनाव हुए लेकिन उनमें से मात्र 13 चुनावों में ही सत्तारूढ़ दल को बजट की घोषणाओं का लाभ मिला। जबकि 11 बार चुनाव पर बजट का कोई असर ही नहीं दिखा और 18 चुनावों में तो बजटीय घोषणाओं के बावजूद सत्तारूढ़ दल को नुकसान झेलना पड़ा। उन 18 चुनावों में से 15 बार कांग्रेस को और 3 बार भाजपा को नुकसान भुगतना पड़ा। इसी प्रकार जिन 13 चुनावों में सत्तारूढ़ दल को लाभ मिला, उनमें 9 बार भाजपा को और 4 बार कांग्रेस को बजट में लोकलुभावन घोषणाओं का लाभ मिला। बजट पेश होने के बाद कुछ सामान महंगा हो जाएगा तो कुछ सस्ता भी होगा। प्रस्तावित आयात शुल्क में वृद्धि से कई चीजें महंगी होने से उसका सीधा असर आम जनता की जेब पर पड़ेगा। महंगे होने वालों सामानों में विदेशी छाता, कैपिटल गुड्स, बिना ब्लेंडिंग वाले फ्यूल, स्मार्ट मीटर, कृत्रिम आभूषण, सौर सेल, सौर मॉड्यूल, हेडफोन, ईयरफोन, लाउडस्पीकर, एक्स-रे मशीन, इलेक्ट्रॉनिक खिलौनों के पुर्जे इत्यादि कई वस्तुएं शामिल हैं। सस्ता होने वाले सामान में विदेश से आने वाली मशीनें, कपड़ा, चमड़े का सामान, जूते-चप्पल, मोबाइल फोन चार्जर, मोबाइल फोन के लिए कैमरा लेंस, हीरे के आभूषण, पैकेजिंग के डिब्बे, कोको बीन्स, मिथाइल अल्कोहल, एसिटिक एसिड, खेती के सामान सस्ते होंगे। कटे और पॉलिश हीरे तथा रत्नों पर कस्टम ड्यूटी घटाकर पांच फीसदी की जाएगी। बजट में पहली बार बैंकिंग पोस्ट ऑफिस में डिजिटल सेवाओं, डिजिटल करेंसी, डिजिटल एजुकेशन, ई-पासपोर्ट, पेपरलेस ई-बिल, किसानों के लिए डिजिटल सेवाएं, रेलवे में 'एक स्टेशन-एक उत्पाद' अवधारणा, गंगा नदी के किनारे पांच किलोमीटर चौड़े कॉरीडोर में स्थित किसानों की भूमि पर विशेष ध्यान, नेशनल टेलीमेंटल हैल्थ प्रोग्राम, नेशनल डिजिटल हैल्थ इको-सिस्टम, 5जी मोबाइल सेवाएं, राष्ट्रीय रोपवे विकास कार्यक्रम, शहरों में ई वाहनों के लिए चार्जिंग सेंटर, ग्रामीण इलाकों में सस्ती ब्रॉडबैंड सेवा जैसी कई महत्वपूर्ण सेवाओं का जिक्र हुआ है। आने वाले समय में करीब 25 हजार किलोमीटर का हाईवे तैयार करने और आगामी तीन वर्षों में 400 नई वंदेभारत ट्रेनें तैयार करने की घोषणाएं भी बजट में हुई हैं। आम बजट में सरकार द्वारा 7.5 लाख करोड़ रुपये के पूंजीगत व्यय का प्रावधान किया गया है, जो आगामी वित्त वर्ष में जीडीपी का 2.9 फीसदी होगा। बजट में वित्त वर्ष 2022-23 में आर्थिक विकास 9.2 फीसदी रहने की उम्मीद जताई गई है। निवेश को बढ़ावा देने के लिए वित्त वर्ष में राज्यों को एक लाख करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता देने और राज्यों को 2022-23 में चार फीसदी तक राजकोषीय घाटे की अनुमति की बात कही गई है। बजट में वित्त वर्ष 2022-23 में कुल खर्च 39.45 ट्रिलियन रुपये होने तथा राजस्व घाटा जीडीपी का 6.4 फीसदी रहने का अनुमान है। 2021-22 में संशोधित राजस्व घाटा जीडीपी का 6.9 फीसदी बताया गया है और 2025-26 तक राजस्व घाटा जीडीपी के 4.5 फीसदी तक पहुंचने की बात कही गई है।

चुनौती बनती जा रही बढ़ती आर्थिक असमानता

-योगेश कुमार गोयल-

पिछले दिनों वीडियो कांफ्रैंस के जरिये आयोजित विश्व आर्थिक मंच के दावोस एजेंडा शिखर सम्मेलन के दौरान पेश गैर सरकारी संगठन ह्यऑक्सफैमह्ल की रिपोर्ट ह्यइनइक्वलिटी किल्सह्ल के अनुसार कोरोना महामारी के दौर में अमीर जहां और अमीर होते जा रहे हैं, वहीं गरीब और गरीब हो रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार महामारी के दौरान भारत के अरबपतियों की कुल सम्पत्ति बढ़कर दोगुने से अधिक हो गई और इस दौरान भारत में अरबपतियों की संख्या भी 39 फीसदी बढ़कर 142 हो गई है। देश के दस सर्वाधिक अमीर लोगों के पास इतनी सम्पत्ति है, जिससे पूरे ढ़ाई दशकों तक देश के हर बच्चे को स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा दी जा सकती है। आर्थिक असमानता पर आई इस रिपोर्ट के मुताबिक 142 भारतीय अरबपतियों के पास कुल 719 अरब अमेरिकी डॉलर यानी 53 लाख करोड़ रुपये से अधिक की सम्पत्ति है और देश के सबसे अमीर 98 लोगों की कुल सम्पत्ति भारत के 55.5 करोड़ सबसे गरीब लोगों की कुल सम्पत्ति के बराबर है। ऑक्सफैम की रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि महामारी के दौरान सबसे धनी 10 फीसदी लोगों ने राष्ट्रीय सम्पत्ति का 45 फीसदी हिस्सा हासिल किया जबकि निचले स्तर की 50 फीसदी आबादी के हिस्से मात्र छह फीसदी राशि ही आई। रिपोर्ट में सरकार से राजस्व सृजन के प्राथमिक स्रोतों पर पुनर्विचार करने तथा कर प्रणाली के अधिक प्रगतिशील तरीकों को अपनाने का आग्रह करते हुए सुझाव दिया गया है कि इन अरबपतियों पर वार्षिक सम्पत्ति कर लगाने से प्रतिवर्ष 78.3 अरब अमेरिकी डॉलर मिलेंगे, जिससे सरकारी स्वास्थ्य बजट में 271 फीसदी बढ़ोतरी हो सकती है।

कोरोना महामारी के इस दौर में एक ओर जहां करोड़ों लोगों के काम-धंधे चौपट हो गए, लाखों लोगों की नौकरियां छूट गई, अनेक लोगों के कारोबार घाटे में चले गए, वहीं कुछ ऐसे व्यवसायी हैं, जिन्हें इस महामारी ने पहले से कई गुना ज्यादा मालामाल कर दिया है। आंकड़े देखें तो भारत में मार्च 2020 से नवम्बर 2021 के बीच देश के 84 फीसदी परिवारों की कमाई में कमी आई और 4.6 करोड़ लोग तो अत्यंत गरीबी में चले गए। इस बीच जितने लोग पूरी दुनिया में गरीबी के दलदल में फंसे, भारत में यह संख्या उसकी आधी है। एक ओर जहां गरीबों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी है, वहीं भारत में अब इतने अरबपति हो गए हैं, जितने फ्रांस, स्वीडन तथा स्विट्जरलैंड को मिलाकर भी नहीं हैं। अति धनाढ्य वर्ग तथा अत्यंत गरीबी में फंसे लोगों के बीच की चौड़ी होती खाई अन्य कमजोर वर्गों को भी प्रभावित कर रही है। आर्थिक विषमता चिंताजनक स्थिति तक बढ़ गई है और विश्व बैंक पहले ही चेतावनी दे चुका है कि दस करोड़ से ज्यादा लोग चरम गरीबी में धकेले जा सकते हैं। ऑक्सफैम की रिपोर्ट में पिछले साल भी स्पष्ट शब्दों में कहा गया था कि यदि कोरोना के कुबेरों से वसूली होती तो भुखमरी नहीं फैलती। विश्व के कई अन्य देशों के साथ भारत में भी बढ़ती आर्थिक असमानता काफी चिंताजनक है क्योंकि बढ़ती विषमता का दुष्प्रभाव देश के विकास और समाज पर दिखाई देता है और इससे कई तरह की सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियां भी पैदा होती हैं। करीब दो साल पहले भी यह तथ्य सामने आया था कि भारत के केवल एक फीसदी सर्वाधिक अमीर लोगों के पास ही देश की कम आय वाली सत्तर फीसदी आबादी की तुलना में चार गुना से ज्यादा और देश के अरबपतियों के पास देश के कुल बजट से भी ज्यादा सम्पत्ति है। आज विश्व आर्थिक पत्रिका ह्यफोर्ब्सह्ल की अरबपतियों की सूची में सौ से भी ज्यादा भारतीय हैं जबकि तीन दशक पहले तक इस सूची में एक भी भारतीय नाम नहीं होता था। हालांकि देश में अरबपतियों की संख्या बढ़ना प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व की बात होनी चाहिए लेकिन गर्व भी तो तभी हो सकता है, जब इसी अनुपात में गरीबों की आर्थिक सेहत में भी सुधार हो।

बहरहाल, ऑक्सफैम की रिपोर्ट में मांग की गई है कि धनी लोगों पर उच्च सम्पत्ति कर लगाते हुए श्रमिकों के लिए मजबूत संरक्षण का प्रबंध किया जाए। दरअसल बड़े औद्योगिक घरानों पर टैक्स लगाकर सार्वजनिक सेवाओं के लिए आवश्यक संसाधन जुटाए जा सकते हैं। कुछ विशेषज्ञों का मत है कि देश के शीर्ष धनकुबेरों पर महज डेढ़ फीसदी सम्पत्ति कर लगाकर ही देश के कई करोड़ लोगों की गरीबी दूर की जा सकती है लेकिन किसी भी सरकार के लिए यह कार्य इतना सहज नहीं है। दरअसल यह जगजाहिर है कि बहुत से राजनीतिक फैसलों पर भी अब इन धन कुबेरों का ही नियंत्रण होता है। तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपने कार्यकाल के कारण वहां के समाज में बढ़ती आर्थिक असमानता पर गहरी चिंता व्यक्त की थी। इसके अलावा बौद्ध धर्मगुरू दलाईलामा तथा ईसाई धर्मगुरू पोप फ्रांसिस सहित कुछ अन्य प्रमुख हस्तियां भी बढ़ती आर्थिक असमानता पर निशाना साधते हुए कह चुकी हैं कि अत्यधिक धन पिपासा समाज में एक नई प्रकार की निरंकुशता को जन्म देती है।

बहरहाल, संयुक्त राष्ट्र जैसी कुछ वैश्विक संस्थाओं के अलावा कुछ देशों की सरकारें हालांकि गरीबी उन्मूलन, बेरोजगारी और आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए वर्षों से प्रयासरत हैं लेकिन बेहतर परिणाम सामने आते नहीं दिख रहे।

बंजर व अनुपयोगी भूमि पर बिजली की खेती

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा-

बंजर या अनुपयोगी भूमि पर बिजली की खेती अजीब अवश्य लग रही है पर सरकार की इस योजना में राजस्थान लीड़र प्रदेश बनता जा रहा है। रेगिस्तानी प्रदेश होने से बंजर और अनुपयोगी भूमि की प्रदेश में अधिकता है। यह बंजर और बेकार भूमि बिजली उत्पादन करने लगे और उत्पादित बिजली की खरीद भी 25 साल के लिए तय हो जाए तो काश्तकार के लिए इससे अच्छी बात क्या हो सकती है? इससे जहां अनुपयोगी भूमि से बिजली निकलने लगेगी तो सरकार को भी सस्ती दर पर बिजली मिलेगी और काश्तकार की भी निश्चित आय सुनिश्चित हो सकेगी। राजस्थान सोलर एनर्जी उत्पादन के लिए अनुकूल प्रदेशों में प्रमुख प्रदेश है। इसमें कोई दो राय नहीं कि प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान यानी कुसुम योजना प्रदेश के बंजर और खेती योग्य भूमि नहीं होने की स्थिति से यह भूमि भी बिजली के उत्पादन के लिए उपजाऊ हो गई है। दरअसल केन्द्र सरकार ने कुसुम योजना के तीन कंपोनेंट बनाए हैं और तीनों ही कंपोनेंट किसानों से जुड़े होने के साथ ही उनके लिए लाभकारी भी हैं। कुसुम ए कंपोनेंट तो पूरी तरह से अन्नदाता की अनुपयोगी भूमि को नियमित

आय का साधन बनाने का माध्यम है। केन्द्र सरकार की इस योजना को राजस्थान ने हाथों-हाथ लिया है। इस योजना के क्रियान्वयन में सबसे बड़ी बाधा ऐसी भूमि पर सोलर प्लांट लगाने पर आने वाले खर्च के लिए ऋण की सहज उपलब्धता नहीं होना रहा है। किसान के पास अगर इतना पैसा नहीं तो बंजर भूमि से आय भी नहीं। ऐसे में योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए वित्तपोषण पहली आवश्यकता महसूस की जाती रही है। इस मुद्दे को प्रभावी तरीके से विभिन्न स्तरों पर उठाया भी गया पर खास परिणाम प्राप्त नहीं हो सके। अब राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की मंशा और अक्षय ऊर्जा निगम के सीएमडी व राज्य के एसीएस एनर्जी डॉ. सुबोध अग्रवाल के सीधे वित्तदायी बैंकर्स से संवाद कायम करने से सकारात्मक हल निकल सका है। बैंकों से सहमति के अनुसार किसानों को कुसुम योजना के कंपोनेंट ए के तहत बंजर व बेकार भूमि पर आधा किलोवाट से 2 मेगावाट तक के सोलर प्लांट लगाने के लिए बिना कोलेटरल सिक्योरिटी के ऋण मिल सकेगा। राजस्थान के अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा डॉ. सुबोध अग्रवाल बैंकों को यह समझाने में सफल रहे कि इस योजना में वित्त पोषण में बैंकों को किसी तरह का जोखिम नहीं है। सीधी बात है कि बंजर भूमि में लगे सोलर प्लांट से बिजली का उत्पादन होगा। उत्पादित बिजली सीधे ग्रीड में जाएगी। संबंधित ग्रीड द्वारा 25 साल तक 3 रु.14 नए पैसे प्रति यूनिट की दर से काश्तकार को भुगतान किया जाएगा। बैंकों से संवाद में यह तय हो सका कि एस्क्रो खाते के माध्यम से भुगतान प्रक्रिया होगी जिससे डिस्काम द्वारा खरीदी गई

बिजली का भुगतान सीधे काश्तकार के बैंक के ऋण खाते में किस्त के रूप में और शेष राशि काश्तकार के खाते में जमा हो सकेगी। इससे बैंक की किस्त भी समय पर जमा होना सुनिश्चित हो सकेगा और काश्तकार को भी भुगतान प्राप्त हो सकेगा। यह सही है कि कुसुम ए योजना के क्रियान्वयन में समूचे देश में राजस्थान पहले स्थान पर होने के बावजूद बैंकों से ऋण मिलने में आ रही दिक्कतों के कारण यह योजना अधिक गति नहीं पकड़ पा रही थी। अभी तक इस योजना में राजस्थान में 14 संयंत्र स्थापित हो चुके हैं। अक्षय ऊर्जा निगम के पास 722 मेगावाट क्षमता स्थापना के 623 आवेदन प्राप्त हो चुके हैं।

बुंदेलखंड के सुधरेंगे दिन

-सिद्धार्थ शंकर-

आम बजट 2022-23 में मध्यप्रदेश को केन-बेतवा लिंक के लिए काफी कुछ मिला है। प्रोजेक्ट पर कुल 44 हजार करोड़ रुपए खर्च होंगे। 1400 करोड़ रुपए दे दिए गए। मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के 13 जिलों को इस प्रोजेक्ट से फायदा होगा। कटनी-पन्ना और छतरपुर जिलों में बहने वाली केन नदी 427 किलोमीटर का सफर तय कर उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के पास यमुना नदी में गिरती है। रायसेन के पास से निकली बेतवा नदी 576 किलोमीटर का सफर तय करती हुई उत्तर प्रदेश के हमीरपुर के पास यमुना नदी में मिलती है। केन-बेतवा लिंक प्रोजेक्ट के तहत ढोढन (पन्ना) में डैम बनाकर केन के पानी को रोका जाएगा। यहां से 220.624 किमी की नहर बनाकर केन का पानी बरुआसागर (झांसी, यूपी) से निकली बेतवा नदी में छोड़ा जाएगा। इसमें 2 किमी लंबी सुरंग भी बनाई जाएगी। बजट पर देशवासियों से बात करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कहा कि आम बजट में केन बेतवा लिंक परियोजना में मिलने वाली राशि से मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड के खेतों में हरियाली आएगी और पलायन रुकेगा। मोदी ने यह बात बजट को लेकर भाजपा कार्यकताओं को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये अपने संबोधन में केन बेतवा लिंक परियोजना को बुंदेलखंड के लिए महत्वपूर्ण बताया। पीएम मोदी ने कहा कि केन बेतवा लिंक परियोजना मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए बेहद महत्वपूर्ण साबित होगी। उन्होंने कहा कि अभी एमपी-यूपी के लोग काम की तलाश में गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु व केरल तक जाते हैं। मगर केन बेतवा लिंक परियोजना की वजह से अब इन लोगों को पलायन करने की जरूरत नहीं होगी। इस परियोजना से किसानों को भरपूर पानी मिलेगा। इससे किसानों को इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं होगी। उल्लेखनीय है कि आम बजट में केन बेतवा लिंक परियोजना के लिए मध्य प्रदेश को 900 करोड़ रुपए देने का प्रावधान किया गया है तो यूपी को 500 करोड़ मिलेंगे। करीब 42 साल पुरानी केन बेतवा लिंक परियोजना ने अब आकार लेना शुरू किया है। नदी जोड़ो अभियान में यह परियोजना बुंदेलखंड के सूखे की स्थिति को दूर करने में मील का पत्थर साबित हो सकती है। केंद्र सरकार ने नदियों को जोड़ने के लिए नेशनल पर्सपेक्टिव प्लान बनाया था। केन-बेतवा लिंक परियोजना प्लान का पहला प्रोजेक्ट है। केन नदी का पानी बेतवा नदी में ट्रांसफर किया जाएगा।

दोनों नदियों को जोड़ने के लिए 220.624 किमी लंबी केन-बेतवा लिंक नहर बनाई जाएगी। मध्यप्रदेश के जिले पन्ना, टीकमगढ़, छतरपुर, सागर, दमोह, दतिया, विदिशा, शिवपुरी, रायसेन और उत्तर प्रदेश के जिले बांदा, महोबा, झांसी, ललितपुर को इससे फायदा होगा। जल शक्ति मंत्रालय के अनुसार, केन-बेतवा लिंक से सालाना 10.62 लाख हेक्टेयर जमीन की सिंचाई हो सकेगी। 62 लाख लोगों को पीने का पानी भी मिलेगा।

बजटः निर्गुण और सगुण दोनों ही

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

इस साल का जो बजट पेश किया गया है, उसे भाजपा के नेता अगले 25 साल और 100 साल तक के भारत को मजबूत बनानेवाला बजट बता रहे हैं और विपक्षी नेता इसे बिल्कुल बेकार और निराशाजनक घोषित कर रहे हैं।

वैसे जब इस बजट को वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण संसद में पेश कर रही थीं तो उनके भाषण को सुननेवाले लोगों को, खासतौर से सामान्य लोगों को लग रहा था कि इस बजट में उनके लिए कुछ नहीं है। सरकार ने न तो रोजमर्रा के इस्तेमाल की कुछ न कुछ चीजों को सस्ता करने की घोषणा की है, न आयकर को घटाकर मध्यम वर्ग को कोई राहत दी है और न ही आम लोगों को कुछ मुफ्त सुविधाओं की घोषणा की है। जैसा कि पिछले बजटों के समय जबर्दस्त नौटंकियां होती थीं, वैसी इस बार बिल्कुल भी दिखाई नहीं पड़ीं। कुल मिलाकर यह बजट निर्गुण निराकार-सा लगता रहा लेकिन जब इसके सारे आंकड़े अलग से विस्तारपूर्वक सामने आए और टीवी चैनलों पर तरह-तरह की बहसें सुनीं तो लगा कि इस बजट में बुनियादी सुधार के कई ऐसे कदम उठाए गए हैं, जिन्हें सरकार के द्वारा जनता को सरल भाषा में अच्छी तरह समझाना होगा। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस बजट में कहीं भी ऐसी झलक नहीं है कि इसका पांच राज्यों के चुनाव से कुछ संबंध है। हर व्यक्ति यह सोच रहा था कि इन पांचों राज्यों के चुनाव में जीत हासिल करने के लिए सरकार इस बजट का इस्तेमाल जरूर करेगी।

सच पूछा जाए तो किसानों और मध्यम वर्ग के व्यापारियों और नौकरीपेशा लोग तो इस बजट से निराश हुए। बड़ी-बड़ी कंपनियां जरूर खुश हुई होंगी कि उनके टैक्स में कटौती हुई है लेकिन सरकार ने जो सपने इस बजट में दिखाए हैं, यदि वह इन्हें ठोस रूप दे सकी तो लोक कल्याण काफी हद तक बढ़ेगा। जैसे वह 60 लाख नए रोजगार देगी, 400 नई रेलें चलाएगी, सारे गंगातटीय प्रदेशों में जैविक खेती को बढ़ावा देगी, 80 लाख मकान गरीबों को देगी, 200 नए टीवी चैनलों द्वारा मातृभाषा के जरिए शिक्षा का प्रसार करेगी, लगभग 4 करोड़ घरों में नलों द्वारा शुद्ध जल पहुंचाएगी, पांच नदियों को जोड़ेगी, 25000 किमी की नई सड़कें बनाएगी, लघु-उद्योगों के प्रोत्साहन में सवा दो लाख करोड़ रु. लगाएगी। इस तरह की घोषणाएं सुनने में तो अच्छी लगती हैं लेकिन इन पर भरोसा तभी होगा जबकि लोगों को इनके ठोस फायदे मिलने लगेंगे। कोरोना महामारी ने करोड़ों लोगों को बेरोजगार किया है ।

बजट में दिखी आत्मनिर्भर भारत की झलक

-सुरेश हिन्दुस्तानी-

कोरोना काल के दौरान केन्द्र सरकार का दूसरी बार प्रस्तुत किया गया बजट कई मायनों में मील का पत्थर प्रमाणित होने वाला दिखाई दे रहा है। वहीं यह बजट आत्मनिर्भर भारत की दिशा में जाने वाले मार्ग को और सुगम बनाने वाला भी है। भारत में आत्मनिर्भरता के द्वार कृषि और युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने से ही खोले जा सकते हैं इसलिए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कृषि उन्नयन और युवाओं को रोजगार देने के लिए पिटारा खोला। वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण में देश की भावी तस्वीर का खाका खींचते हुए बेरोजगारी समाप्त करने की पहल की है, जिसके अंतर्गत युवा वर्ग को आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत 16 लाख नौकरियां दी जाएंगी। वहीं, मेक इन इंडिया के तहत 60 लाख नौकरियां आएंगी। हालांकि प्रधानमंत्री युवाओं से बहुत पहले से यह आह्वान करते आए हैं कि भारत का युवा अपने आपको ऐसा बनाए कि वह रोजगार पाने की दिशा में नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला बने। इसके लिए सरकार ने पहले ही लघु और मध्यम उद्योग स्थापित करने के लिए कई योजनाएं चलाई हैं। जिसका उपयोग करके युवाओं ने अपनी प्रतिभा और क्षमता दिखाकर सफलता प्राप्त की है। इसी के साथ आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए लघु एवं मध्यम उद्योग को स्थायित्व प्रदान करने के लिए केन्द्र सरकार ने ठोस प्रावधान किया है। लघु एवं मध्यम उद्योग के माध्यम से जहां स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा, वहीं स्थानीय स्तर पर बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर भी पैदा किए जा सकेंगे। इससे बड़ा लाभ यह भी है कि उद्यम जगत की प्रतिभाओं को अपने शहर या गांव में ही कौशल दिखाने का अवसर मिलेगा। सरकार के इस कदम को आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम माना जा रहा है। यह बात सही है कि वर्तमान में विज्ञापनों के मोहजाल में फंसाकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत के बाजार पर अपना साम्राज्य स्थापित किया है, जिसके कारण देश के युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर नहीं मिल पाता है। केन्द्र सरकार के सकारात्मक प्रयासों के चलते इस धारणा में व्यापक परिवर्तन दिखाई देने लगा है। भविष्य में भी सरकार ने अपने बजट में इसे प्रभावी आकार में स्थापित करने की मंशा दिखाई है। इसके अलावा वित्तमंत्री ने आर्थिक जगत में आई तकनीकी क्रांति के साथ कदम मिलाते हुए कहा कि इसमें सफलता के लिए एक डिजिटल विश्वविद्यालय भी बनाया जाएगा। यह विदेशी क्रिप्टो करंसी के एकाधिकार को समाप्त करने की दिशा में सार्थक कदम माना जा रहा है। भारत सरकार ने बजट प्रस्तुत करते हुए कहा है कि वह अपने देश की क्रिप्टो करंसी बनाएगी। वर्तमान में कदम-कदम पर डिजिटल अवधारणा को प्रमुखता दी जा रही है। आज का बाजार भी डिजिटल रूप में विकसित होता जा रहा है। सरकार की भी यही योजना है कि देश का पैसा देश में ही रहे। इसे भी आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम निरूपित किया जा रहा है। आत्मनिर्भर भारत योजना के लक्ष्यों को पाने के लिए शुरू की गई प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेटिव योजना को बेहतर सफलता मिली है। इससे 60 लाख नई नौकरियां पैदा होंगी और अगले 5 सालों में 30 लाख करोड़ का अतिरिक्त उत्पादन होगा। जहां तक किसानों के उन्नयन की बात है तो इस बार भी केन्द्र सरकार किसानों की हालत सुधारने के लिए कृत संकल्पित दिखाई दी है। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व के बजट में किसानों को सीधे आर्थिक सहयोग करने की बात कही थी, जिसे केन्द्र सरकार ने पूरा किया और अब पीएम किसान के लाथार्थियों की संख्या 12 करोड़ 47 लाख से अधिक हो गई है।

मोदी सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य के तहत इस योजाना की शुरूआत 2018 में किया था। अब तक सरकार 10 किस्त जारी कर चुकी है। इस बार के बजट में कहा है कि कृषि फसलों की खरीद पर सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूं और धान की खरीद 163 लाख किसानों से 1,208 लाख टन को कवर करेगी। इसके साथ ही 2.37 लाख करोड़ रुपये किसानों के खातों में एमएसपी मूल्य का सीधा भुगतान होगा।

शीतकालीन ओलंपिक खेलों की हुई शुरूआत

उद्घाटन समारोह में आरिफ खान ने थामा तिरंगा

नई दिल्ली। चीन के नेशनल स्टेडियम में 2022 के शीतकालीन ओलंपिक खेलों का उद्घाटन समारोह शुक्रवार को हुआ। उद्घाटन समारोह के साथ ही शीतकालीन ओलंपिक की आधिकारिक शुरूआत भी हो चुकी है। उद्घाटन समारोह परेड में अल्पाइन स्कीयर मोहम्मद आरिफ खान भारत का ध्वज लेकर उतरे। आरिफ ने चार सदस्यों के भारतीय दल की अगुवाई की।

इसके साथ ही वह जेरेमी बुकावोस्की, शिवा केशवन और नेहा आहुजा जैसे एथलीटों की सूची में शामिल हो गए हैं, जिन्हें

शीतकालीन ओलंपिक खेलों में भारतीय ध्वजवाहक होने का गौरव प्राप्त हुआ है। उद्घाटन समारोह में दुनिया भर के 91 प्रतिनिधिमंडलों के प्रतिनिधि इस समारोह में भाग ले रहे हैं,

जिसमें रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, सर्बियाई राष्ट्रपति अलेक्जेंडर वूसिक, अर्जेंटीना के राष्ट्रपति अल्बर्टो फर्नांडीज और संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस सहित विश्व के नेता शामिल हैं। शीतकालीन ओलंपिक मशाल बीजिंग, यानकिंग और झांगजियाकौ के तीन प्रतियोगिता क्षेत्रों में तीन दिवसीय रिले के दौरान अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अध्यक्ष थॉमस बाक सहित लगभग 1,200 मशालवाहकों के हाथों से गुजरी है।

एडिलेड स्ट्राइकर्स ने बल्लेबाज जॉन वेल्स के साथ खत्म किया करार

मेलबर्न। एडिलेड स्ट्राइकर्स ने शुक्रवार को घोषणा की कि उन्होंने अनुभवी मध्य क्रम के बल्लेबाज जॉन वेल्स के साथ अपना करार खत्म कर लिया है। स्ट्राइकर्स ने कहा है कि सूची प्रबंधन रणनीति में बदलाव के कारण क्लब को ऐसा निर्णय लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। स्ट्राइकर्स ने एक बयान में कहा, "यह एक कठिन निर्णय है, हालांकि वर्तमान परिदृश्य में विदेशी खिलाड़ियों की अनिश्चितता, युवा प्रतिभा की गहराई और एक टीम के रूप में लगातार विकसित होने की आवश्यकता के साथ, स्ट्राइकर्स एक टीम बनाने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

वेल्स ने स्ट्राइकर्स के साथ पांच सीजन में 68 मैच खेले। बीबीएल-11 में उन्होंने क्लब के लिए 128.79 के स्ट्राइक-रेट से 501 रन बनाए, जिसमें चार अर्धशतक शामिल थे, जिसमें सिडनी सिक्सर्स के खिलाफ 47 गेंदों में नाबाद 62 रन भी शामिल है। स्ट्राइकर्स के कोच जेसन गिलेस्पी ने कहा, "वेल्स एक शानदार क्रिकेटर हैं और यहां अपने समय में उन्होंने स्ट्राइकर्स के लिए जो कुछ भी दिया है, उसके बारे में सभी जानते हैं। आप जानते हैं कि जब वह बल्लेबाजी के लिए जाते हैं तो वह टीम के लिए वह सब कुछ देते हैं, जो आवश्यक हैं।" उन्होंने कहा, "वेल्स हमेशा हमारे लिए एक महान बल्लेबाज रहे हैं। वह मैदान के अंदर और बाहर एक बेहतरीन इंसान हैं, उनका धन्यवाद। मुझे पता है कि वेल्स अपने रास्ते में आने वाली किसी भी चुनौती से निपटने में सफल होंगे।" बता दें कि वेल्स, क्रिस लिन, आरोन फिंच और ग्लेन मैक्सवेल के बाद बीबीएल में सर्वकालिक प्रमुख रन बनाने वालों की सूची में चौथे नंबर पर हैं।

वॉलीबॉल लीग : पीवी सिंधु और उनके पिता ने बेंगलुरु टॉरपीडो के खिलाड़ियों से की मुलाकात

हैदराबाद। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु और उनके पिता, पीवी रमना, (जो एक पूर्व भारतीय वॉलीबॉल खिलाड़ी हैं व 1986 एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता टीम के सदस्य हैं) ने प्राइम वॉलीबॉल लीग के 2022 संस्करण की शुरूआत से पहले यहां शिविर में बेंगलुरु टॉरपीडो टीम के खिलाड़ियों से मुलाकात की।

यह टूनार्मेंट 5 फरवरी से शुरू होने

वाला है और बेंगलुरू टॉरपीडो के खिलाड़ियों के लिए लीग से पहले ऐसे दिग्गज खिलाड़ियों से मिलना एक यादगार अनुभव था।

बेंगलुरु टॉरपीडो के कप्तान रंजीत सिंह ने कहा कि टीम के युवा खिलाड़ी पीवी सिंधु से मिलने के बाद उत्साहित महसूस कर रहे हैं और प्रदर्शन करने के लिए और भी अधिक प्रेरित हैं। यह सभी के लिए एक बहुत ही समृद्ध अनुभव था।

पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के बीच टेस्ट श्रृंखला की शुरूआत 4 मार्च से

लाहौर। पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के बीच तीन मैचों की टेस्ट श्रृंखला अब रावलपिंडी में 4 मार्च से शुरू होगी। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) और क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने शुक्रवार को तीन टेस्ट, तीन एकदिनी और एक टी20 अंतरराष्ट्रीय दौरे के संशोधित कार्यक्रम की घोषणा की। रावलपिंडी में शुरूआती टेस्ट मैच 4-8 मार्च, दूसरा टेस्ट कराची में 12-16 मार्च और तीसरा लाहौर में 21-25 मार्च तक खेला जाएगा। सफेद गेंद के चार मैच 29 मार्च से 5 अप्रैल तक खेले जाएंगे। पीसीबी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी फैसल हसनैन ने एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा, "हमें खुशी है कि क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया बोर्ड ने औपचारिक रूप से अपने पक्ष के पांच सप्ताह के दौरे के कार्यक्रम को मंजूरी दे दी है और पुष्टि की है कि उनके सर्वश्रेष्ठ उपलब्ध खिलाड़ी 24 वर्षों में पहली बार पाकिस्तान का दौरा करेंगे। हम वास्तव में पैट कमिंस और उनके खिलाड़ियों की मेजबानी करने के लिए उत्साहित हैं, और एक प्रतिस्पर्धी श्रृंखला के लिए तत्पर हैं जिसमें तीन टेस्ट, तीन एकदिवसीय और एक टी20 मैच शामिल है।" बता दें कि लॉजिस्टिक और ऑपरेशनल चुनौतियों को कम करने के साथ-साथ पाकिस्तान डे रिहर्सल से बचने के लिए शेड्यूल को संशोधित किया गया है, जो आमतौर पर मार्च के दूसरे सप्ताह में इस्लामाबाद में शुरू होगा। दोनों क्रिकेट बोर्ड इस बात पर भी सहमत हुए हैं कि 27 फरवरी को चार्टर्ड फ्लाइट से इस्लामाबाद पहुंचने से पहले ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम ऑस्ट्रेलिया में ही अपना अलगाव पूरा कर लेगी। ऑस्ट्रेलिया में क्वारटीन में रहने के बाद 24 मार्च को ऑस्ट्रेलिया के सफेद गेंद के खिलाड़ियों के लाहौर पहुंचने की उम्मीद है।

महिला क्रिकेट : न्यूजीलैंड क्रिकेट ने भारत के खिलाफ एकदिनी श्रृंखला की तारीखों में किया बदलाव

ऑकलैंड। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने शुक्रवार को भारत के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला की तारीखों में बदलाव की घोषणा की। भारतीय महिलाओं और न्यूजीलैंड के बीच टी-20 और एकदिनी श्रृंखला विशेष रूप से क्वीन्सटाउन के जॉन डेविस ओवल में खेला जाएगा।

न्यूजीलैंड क्रिकेट ने एक आधिकारिक बयान में कहा,

"पहले टी-20 मैच की तारीख पहले की तरह ही निर्धारित है, लेकिन बाद के पांच एकदिनी मैचों की श्रृंखला में कुछ समायोजन किए गए हैं।" पहले तीन एकदिवसीय मैच क्रमशः 11,14 और 16 फरवरी को खेले जाने थे, लेकिन अब वे 12,15 और 18 फरवरी को खेले जाएंगे, जबकि एकमात्र टी-20 मैच 9 फरवरी को खेला जाएगा।

मोहम्मद हसनैन को संदिग्ध गेंदबाजी एक्शन के लिए किया गया निलंबित

लाहौर। 21 वर्षीय तेज गेंदबाज मोहम्मद हसनैन संदिग्ध गेंदबाजी एक्शन के कारण निलंबित हो गए हैं। अब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने उनके लिए एक गेंदबाजी सलाहकार नियुक्त किया है, जो उनके एक्शन में सुधार करने में मदद करेगा। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) के स्वतंत्र विशेषज्ञ ने उनकी गेंदबाजी एक्शन में गड़बड़ी पाई थी। हसनैन को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेलने से तब तक निलंबित रखा जाएगा, जब तक कि वह अपनी गेंदबाजी एक्शन में सुधार नहीं कर लेते। ऑस्ट्रेलिया की बिग बैश लीग

(बीबीएल-11) में सिडनी थंडर के लिए खेलते हुए हसनैन को (जिन्होंने साकिब महमूद की जगह ली और ब्रिस्बेन हीट के खिलाफ एक बड़ा योगदान दिया) अंपायरों द्वारा रिपोर्ट किया गया था, जिन्होंने उनके गेंदबाजी एक्शन पर सवाल उठाए थे। गेंदबाज ने सिडनी थंडर के लिए पांच मैच खेले थे, तब उन्हें गेंदबाजी एक्शन की जांच के लिए लाहौर में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला में भेजा गया था। पीसीबी ने शुक्रवार को एक बयान में कहा कि उन्होंने सीए के स्वतंत्र विशेषज्ञ द्वारा समीक्षा और सत्यापित की गई रिपोर्ट पर ध्यान दिया है, जिन्होंने हसनैन के गेंदबाजी एक्शन को संदिग्ध बताया है। पीसीबी ने कहा, "पीसीबी को आज क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया से मोहम्मद हसनैन के मूल्यांकन परीक्षण पर एक औपचारिक और विस्तृत रिपोर्ट मिली। जिसमें कहा गया था कि उनकी अच्छी लेंथ डिलीवरी, फुल लेंथ डिलीवरी, धीमी बाउंसर वाली डिलीवरी संदिग्ध थी।"

उन्होंने कहा, "पीसीबी ने अपने गेंदबाजी विशेषज्ञों के साथ रिपोर्ट पर चर्चा की है और उन्हें विश्वास है कि समस्या का समाधान किया जा सकता है।

आईएसएल : ड्रा खेलकर मुंबई सिटी और मोहन बगान ने अंक बांटे

गोवा। मौजूदा चैम्पियन मुंबई सिटी एफसी और एटीके मोहन बगान ने गुरुवार रात फतौर्डा स्थित पंडित जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में खेले गए हीरो इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2021-22 के लीग मुकाबले में 1-1 से ड्रा खेलकर अंक बांट लिये। बगान के स्पेनिश डिफेंडर टिरी को मजबूत रक्षण के लिए हीरो ऑफ द मैच अवार्ड से नवाजा गया। इस ड्रा के बाद मुंबई की जीत से दूरी सात मैचों तक पहुंच गई है और वो छठे स्थान पर बरकरार है। कोच डेस बकिंगहम की टीम 13 मैचों में पांच जीत और चार ड्रा से 19 अंक जुटा चुकी है। वहीं, इस ड्रा से महरून एंड ग्रीन ब्रिगेड की स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ा है और वो 12 मैचों में 20 अंकों के साथ तालिका में पांचवें स्थान पर बनी हई है। बगान ने पांच मैच जीते हैं और पांच ड्रा खेले हैं। मैच का पहला गोल नौवें मिनट में आया, जब ऑस्ट्रेलियन स्ट्राइकर डेविड विलियम्स ने मुंबई सिटी के मोरोक्कन डिफेंसिव मिडफील्डर अहमद जहौह की डिफेंसिव गलती का फायदा उठाकर मोहन बगान को 1-0 से आगे कर दिया। यह अवसर उस समय बना, जब जहौह अति-आत्मविश्वास दिखाते हुए तुरंत क्लियरेंस करने की बजाय गेंद पर नियंत्रित रखने के चक्कर में रहे लेकिन बगान के हुगो बौमाउस ने तेजी से आगे आकर उनके ऊपर दबाव बनाया, जिससे गेंद उनके काबू से बाहर हो गई और डेविड ने मौके का फायदा उठाते हुए जहौह को छकाया और फिर करारा राइट फुटर शॉट लगाया। गेंद डिफेंडर मेहताब सिंह के पैरों की बीच से होते हुए गोलकीपर मोहम्मद नवाज के दाहिने से गोलपोस्ट के अंदर चली गई।

24वें मिनट में बगान के कप्तान प्रीतम कोटाल के आत्मघाती गोल की मदद से मुंबई 1-1 की बराबरी पर आ गई। बाएं फ्लैंक से बने हमले में विंगर बिपिन सिंह ने सटीक क्रॉस डाला, जिसे डिफेंडर प्रीतम ने हैडर से क्लीयर करने को कोशिश की लेकिन गेंद उनके सिर से लगाने के बाद गोलपोस्ट के अंदर चली गई।

अब हम और गलतियां नहीं कर सकते- जसवीर सिंह

बेंगलुरू। पिछले कुछ मैचों में आकर्षक प्रदर्शन न कर पाने के बावजूद प्रो कबड्डी लीग में जीएमआर समूह की फ्रेंचाइजी यूपी योद्धा को तेलुगु टाइटन्स के खिलाफ अपने आगामी मुकाबले में वापसी करने का पूरा भरोसा है। वर्तमान में यूपी की टीम 42 अंकों के साथ अंक तालिका में 8वें स्थान पर हैं और उनका अगला सामना शनिवार की रात, 05 फरवरी, 2022 को तेलुगु टाइटन्स से होगा।

तेलुगु टाइटन्स के विरुद्ध मैच से पहले यूपी योद्धा के मुख्य कोच जसवीर सिंह ने टिप्पणी करते हुए कहा, ह्लअब गलतियों की कोई गुंजाइश नहीं बची है। हमने आगामी मैचों के लिए अपनी रणनीति पर चर्चा की है और योजना बनाई है एवं अपनी प्ले-ऑफ की उम्मीदों को हकीकत में बदलने के लिए हम तैयार हैं। लड़कों को पता है कि जीतने के लिए एक टीम के रूप में खेलना

होता है और ऐसा उन्होंने इस सीजन में कई मौकों पर इस बात को सिद्ध किया है।

हमें वपसी को लेकर पूरा भरोसा है और हम अपने अगले मैच में 5 अंक से कम के साथ समझौता नहीं करेंगे। अंक तालिका में 8वें स्थान पर होने के बावजूद, यूपी योद्धा पीकेएल 8 में बेंगलुरु बुल्स के बाद दूसरी सबसे ज्यादा 'टोटल पॉइंट्स' बटोरने वाली टीम है। यूपी योद्धा ने 12 'सुपर रेड' और 21 'सुपर टैकल' किये हैं, जो इस सीजन में अब तक किसी भी टीम द्वारा सबसे अधिक है। सुरेंद्र गिल इस सीजन में यूपी योद्धा के लिए स्टार खिलाडी रहे हैं, वह 'टोटल पॉइंट्स' और 'रेड पॉइंट्स' तालिका में क्रमशः चौथे और 5 वें स्थान पर हैं , जबकि यूपी योद्धा के कप्तान नितेश 'टैकल पॉइंट्स' की तालिका में छठे नंबर पर हैं ।

मेरे लिए संन्यास लेने का निर्णय आसान नहीं था : कमला देवी

नई दिल्ली। भारतीय फुटबॉल ने पिछले कुछ वर्षों में कई रोल मॉडल तैयार किए हैं, और उनमें से एक हैं कमला देवी, जिन्होंने हाल ही में अपने पेशेवर फुटबॉल करियर को अलविदा कहा है। 12 साल तक भारतीय फुटबॉल की सेवा करने के बाद, कमला ने इस सप्ताह की शुरूआत में संन्यास लेने का फैसला किया।

कमला ने एक आधिकारिक बयान में कहा, " मेरे लिए यह एक आसान निर्णय नहीं है। यह मेरे लिए एक बहुत ही भावनात्मक क्षण था, लेकिन मुझे लगा कि मेरे लिए संन्यास लेने का यह सही समय है। मैं कई वर्षों से शीर्ष स्तर पर खेली हूं, और इसे हमेशा जारी रखना आसान नहीं होता है।"उन्होंने आगे कहा, "मेरे सबसे बड़े आलोचक शायद मेरे पिता थे, लेकिन वह चाहते थे कि मैं जीवन में अच्छा करूं, वह फुटबॉल के बारे में ज्यादा नहीं जानते थे। इसलिए जब मैं एक बच्ची थी, तो वह हमेशा मुझे खेलना बंद कर पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहते थे। मुझे लगता है, उन्हें भी एहसास हुआ कि मुझे खेल से दूर रखना बेकार है,

लेकिन जब उन्होंने देखा कि मैं फुटबॉल के माध्यम से जगह पा रहा हूं, तब उन्होंने मेरा समर्थन करना शुरू कर दिया।"

अपनी भविष्य की योजनाओं के बारे में कमला ने कहा कि वह कोचिंग में जा सकती हैं और वह फुटबॉल से जुड़े रहना चाहती हैं।

उन्होंने कहा, "शायद मैं कोचिंग में आ जाऊं। लेकिन उससे भी ज्यादा, मैं समाज और फुटबॉल को वापस देना चाहती हूं। मैं अपने गांव में अपनी खुद की फुटबॉल अकादमी बनाना चाहती हूं। वहां बहुत सारे बच्चे हैं जो फुटबॉल से प्यार करते हैं। लेकिन उनके पास सही मार्गदर्शन नहीं है। मुझे लगता है, एक फुटबॉलर के रूप में मेरे पास जितने भी अनुभव हैं, मैं उन सभी को कुछ वापस दे सकती हूं। मैंने अकादमी के बारे में बहुत सोचा है, और अब मेरे पास अधिक समय है, मैं इसके लिए काम कर सकती हूं।" उन्होंने आगे कहा, "यदि आप फुटबॉल से प्यार करते हैं, तो इसे जुनून के साथ खेलें। जीवन में कुछ भी आसान नहीं है। हर कदम पर कठिनाइयां आती हैं। लेकिन यह सब उस जुनून और मानसिकता के बारे में है जिसके साथ आप इसे प्राप्त करते हैं। यदि आप जो कर रहे हैं उसके बारे में भावुक हैं , और यदि आप पर्याप्त रूप से प्रेरित और जिद्दी हैं, तो आप इसे पा सकते हैं, चाहे कार्य कितना भी कठिन क्यों न हो।"

रोहित शर्मा के लिए फिट रहने की चुनौती : अजीत अगरकर

मुंबई । भारत के पूर्व हरफनमौला खिलाड़ी अजीत अगरकर का मानना है कि सफेद गेंद के कप्तान रोहित शर्मा के लिए भविष्य में आने वाले हर मैच में फिट रहने की चुनौती है। वेस्टइंडीज के खिलाफ 6 फरवरी से अहमदाबाद में एकदिवसीय मैचों सीरीज से शुरू होगी। नए कप्तान बनने के बार शर्मा के लिए यह पहली सीरीज होगी। अगरकर ने कहा, "मुझे लगता है कि यह एक अच्छी बात है और सही काम है। सफेद गेंद के प्रारूप के लिए एक कप्तान होना बड़ी बात है। इसलिए, मेरी राय में रोहित शर्मा के लिए फिट रहना और सब कुछ मैनेज करना चुनौती का काम होगा।"

अगरकर ने स्टार स्पोर्ट्स पर गेम प्लान शो में कहा, " आप एक फिट कप्तान चाहते हैं। इससे पहले विराट कोहली और एमएस धोनी दोनों बहुत फिट थे। वे शायद ही कभी कोई मैच खेलने से चूकते थे।" 2020 की शुरूआत के बाद से, शर्मा विभिन्न चोटों से परेशान रहे है, जिसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण विदेशी दौरे पर चूक गए। फरवरी 2020 में बे ओवल में पांचवें टी20 में चोट लगने के बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ एकदिवसीय और टेस्ट श्रृंखला से बाहर हो गए

थे। कोरोना महामारी के कारण खेल पर प्रभाव पड़ने के बाद, शर्मा चोट के कारण यूएई 2020 के दौरान मुंबई इंडियंस को ट्रॉफी तक पहुंचाने नाकाम रहे थे। इसके परिणामस्वरूप शर्मा सफेद गेंद के साथ-साथ ऑस्ट्रेलिया में 2020/21 बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के पहले दो टेस्ट से भी चूक गए थे दिसंबर 2021 में शर्मा को सफेद गेंद का कप्तान नामित किया गया और उन्हें टेस्ट क्रिकेट में उपकप्तान के पद पर पदोन्नत किया गया। लेकिन 2021 में टेस्ट में भारत के सबसे अधिक रन बनाने वाले शर्मा को मुंबई में नेट सत्र के दौरान चोट के कारण साउथ अफ्रीका की पूरी यात्रा से बाहर कर दिया गया था। अब शर्मा के पूरी तरह फिट होने के साथ, वह रविवार को वेस्टइंडीज के खिलाफ अपने 1000वें वनडे में भारत की अगुवाई करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

चिली में आग लगने से 1,200 हेक्टेयर से अधिक जला जंगल

सेंटियागो। दक्षिणी चिली के टिएरा डेल फुएगो प्रांत में आग लगने से तिमाउकेल के कम्यून में 1,235 हेक्टेयर जंगल तबाह हो गया है। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, गुरुवार को कोनाफ के कार्यवाहक क्षेत्रीय निदेशक जॉन रेवेलो ने कहा कि आग 25 जनवरी को एक वानिकी कंपनी के स्वामित्व वाली भूमि पर लगी थी और सोमवार तक 600 हेक्टेयर भूमि जल चुकी थी।

रेवेलो ने कहा कि चुनौतीपूर्ण इलाके, वनस्पति, गिरे हुए पेड़ों और लकड़ी के संचय और मौसम की स्थिति ने आग पर काबू पाना मुश्किल बना दिया है। कृषि मंत्री मारिया एमिलिया अंडररगा ने स्थानीय मीडिया को बताया कि प्रभावित क्षेत्र में लेंगा जंगल है।

कोनाफ ने कहा कि 15,000 लीटर पानी की भार क्षमता वाले पांच विमान बुधवार से आग पर काबू पाने की कोशिश कर रहे हैं।

अमेरिकी सेना टीका लेने से इनकार करने वाले कर्मियों को सेवामुक्त करेगी

वाशिंगटन। अमेरिकी थल सेना ने बृहस्पतिवार को कहा कि वह उन सैनिकों को तत्काल सेवामुक्त करना शुरू करेगी, जिन्होंने कोविड-19 टीका लेने से इनकार कर दिया है। इस कदम से सेना से 3,300 से अधिक कर्मियों को जल्द ही बाहर किए जाने की आशंका है। मरीन कॉर्प्स, वायु सेना और नौसेना पहले ही टीका लेने से इनकार करने वाले सैनिकों या प्रवेश स्तर के कर्मियों को ड्यूटी से हटा चुकी है। अब तक थल सेना ने किसी को सेवा से नहीं हटाया है। थल सेना की ओर से पिछले हफ्ते जारी आंकड़ों के मुताबिक 3,300 से ज्यादा जवानों ने टीका लेने से इनकार कर दिया है। सेना ने कहा है कि 3,000 से अधिक सैनिकों को कड़ी टिप्पणी वाले आधिकारिक पत्र भेजे गए हैं। इससे पता चलता है कि अनुशासनात्मक प्रक्रिया में ऐसे कर्मियों की पहचान की जा चुकी है और उनमें से कुछ को सबसे पहले सेवा से हटाया जा सकता है। अमेरिकी रक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन ने ड्यूटी पर तैनात जवानों, नेशनल गार्ड और रिजर्व में रखे गए जवानों समेत सभी सैनिकों को टीका लेने का आदेश दिया है। देश भर में कोविड-19 के मामलों में वृद्धि जारी है। अनुमान के मुताबिक सेना के 97 प्रतिशत सैनिकों को टीके की कम से कम एक एक खुराक लग चुकी है। वहीं, 3,000 से अधिक कर्मियों ने चिकित्सा या धार्मिक आधार पर छूट का अनुरोध किया है। सैन्य सचिव क्रिस्टीन वर्मुथ ने बुधवार को निर्देश जारी कर कमांडरों को ऐसे कर्मियों के खिलाफ कार्यवाही शुरू करने का आदेश दिया, जिन्होंने खुराक लेने से इनकार कर दिया है।

इराक व सीरिया पर तुर्की के युद्धक विमानों का हमला, चार की मौत

बगदाद। तुर्की के युद्धक विमानों ने इराक और सीरिया के भीतर संदिग्ध कुर्दिश विद्रोहियों के ठिकानों पर हमले किये हैं। इराक में स्थित संयुक्त राष्ट्र मिशन के मुताबिक इन हमलों में कम से चार लोगों को मारे जाने की खबर है। तुर्की पर कुर्दिश विद्रोहियों के तमाम हमलों के प्रतिकार स्वरूप तुर्किश युद्धक विमानों का निशाना इराक और सीरिया के तमाम इलाके बने हैं। इराक में संयुक्त राष्ट्र संघ के मिशन (यूएनएएमआई) ने ट्वीट कर जानकारी दी कि तुर्की के हमले से आम लोगों को जानमाल का नुकसान हुआ है। कम से कम चार लोगों के मारे जाने क पुष्टि करते हुए मिशन के ट्वीट में इराक के निनेवा शहर में हवाई हमलों की बात कही गयी है। यूएनएएमआई ने कहा कि इराक की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का हर कीमत पर, हर समय सम्मान किया जाना चाहिए। संदेश में दोहराया गया है कि स्थानीय आबादी की हिफाजत सुनिश्चित की जानी होगी। साथ ही कहा गया है कि सभी विवादों का निपटारा बातचीत व सहयोग के जरिये किया जाना चाहिए। उधर तुर्की के रक्षा मंत्रालय ने एक वक्तव्य में कहा कि हमलों की पुष्टि की है। कहा गया है कि इन ताजा हवाई हमलों का मकसद तुर्की की सीमाओं की रक्षा सुनिश्चित करना था। इराक में यूनीसेफ की प्रतिनिधि शीमा सेन गुप्ता ने एक वक्तव्य में सभी हितधारकों का ध्यान आकर्षित किया है कि बच्चों की सुरक्षा सदैव ही प्राथमिकता होनी चाहिये। उन्होंने संघर्ष से प्रभावित इलाकों में बच्चों और समुदाय के सदस्यों को बचाने के ठोस प्रबंध करने की मांग की है।

चीन और पाकिस्तान के रिश्ते को साझेदारी कहना गलत: अमेरिका

न्यूयॉर्क। अमेरिका का कहना है कि चीन और पाकिस्तान के आपसी रिश्ते को साझेदारी को नाम देना गलत है। अमेरिका के विदेश विभाग के प्रवक्ता से बुधवार को प्रेस ब्रीफिंग में एक पत्रकार ने सवाल पूछा कि क्या चीन के साथ मिलकर काम करने के पाकिस्तान के चुनाव के कारण उस अमेरिको द्वारा नजरअंदाज किया जा रहा है। इस सवाल का जवाब देते हुए प्रवक्ता ने कहा, हमने हमेशा यही स्पष्ट किया है कि किसी भी देश के लिए अमेरिका और चीन में से किसी एक का चुनाव करने की जरूरत नहीं है। हमारा इरादा है कि हम देशों को विकल्प दें कि अमेरिका के साथ उनका रिश्ता कैसा दिखता है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान अमेरिका का रणनीतिक साझेदार है और पाकिस्तान की सरकार के साथ अमेरिका महत्वपूर्ण रिश्ता है और इस रिश्ते का हम सभी मोर्चों पर सम्मान करते हैं। प्रवक्ता ने कहा, अमेरिका के साथ साझेदारी से कई लाभ होते हैं, जो आमतौर पर देशों को नहीं मिल पाते , जब हम चीन के साथ साझेदारी -वैसे इसे साझेदारी कहना गलत होगा- की बात आती है। हम इस पाकिस्तान और चीन पर छोड़ देते हैं कि वे अपने संबंधों को लेकर क्या कहते हैं। प्रवक्ता से जब यह पूछा गया कि भारत की लोकसभा में कांग्रेस पार्टी के नेता राहुल गांधी ने कथित बयान दिया है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रणनीतिक भूल के कारण पाकिस्तान और चीन के बीच रिश्ता बना , तो उन्होंने कहा कि वे ऐसे बयान का समर्थन नहीं करते हैं। फेडरेशन और अमेरिकन साइंटिस्ट के मुताबिक 2002 से 2020 के बीच पाकिस्तान को कुल 34.25 बिलियन डॉलर की मदद मिली, जिसमें से 8.28 बिलियन डॉलर सुरक्षा सहयोग और 14.57 बिलियन डॉलर अफगानिस्तान में अमेरिका और उसके सहयोगी देशों को सहयोग देने के लिए गठबंधन सहयोग फंड के रूप में दिये गये।

बांग्लादेश में प्रतिबंधित चीनी उत्पादों की अबाध खरीद-बिक्री को विशेषज्ञों ने बताया विनाशकारी

ढाका/कोलकाता। बांग्लादेश में चीन से आयातित प्रतिबंधित उत्पादों की धड़ल्ले से हो रही खरीद व बिक्री पर कुछ चिंतकों एवं बुद्धिजीवियों ने गंभीर चिंता जताई है। उनका मानना है कि प्रतिबंधित उत्पादों की बिक्री से देश का युवा वर्ग बड़े पैमाने पर प्रभावित हो रहा है और यह विनाशकारी है। दरअसल, तमाम प्रतिबंधों के बावजूद चीन से सेक्स टॉय, वियाग्रा एवं आतिशबाजी से जुड़े उत्पाद बड़े पैमाने पर बांग्लादेश पहुंच रहे हैं। बांग्लादेश में ये उत्पाद कहीं खुलेआम तो कहीं गोपनीय तरीके से खरीदे और बेचे जाते हैं। इसके कुछ दुष्परिणाम भी सामने आने लगे हैं। विकृत यौनता से जुड़े सेक्स टॉय के इस्तेमाल से युवा वर्ग मानसिक तौर पर प्रभावित होकर अपराध की ओर अग्रसर हो रहा है। हाल ही में ढाका में एक स्कूल छात्रा की मौत के मामले में पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चला कि मृत छात्रा के यौनांग में सेक्स टॉय डाला गया था। चीनी उत्पादों के प्रचार के लिए बांग्लादेश में सोशल मीडिया पर धड़ल्ले से विज्ञापन प्रचारित किये जा रहे हैं। प्रतिबंधों के बावजूद ऐसे उत्पाद लोग घर बैठे ऑनलाइन अथवा फोन कॉल के

जरिए ऑर्डर देकर बड़ी आसानी से यह उत्पाद हासिल कर लेते हैं। इसी तरह चीन से आयातित आतिशबाजी एवं इलेक्ट्रानिक फानुष वातावरण को प्रदूषित करने के साथ-साथ बड़ी दुर्घटनाओं की वजह भी बन रहे हैं। इस संवेदनशील विषय को लेकर हिन्दुस्थान समाचार ने बांग्लादेश के कुछ इस्लामी चिंतकों, पुलिस के आला अधिकारियों एवं बुद्धिजीवियों से बातचीत की है।

बांग्लादेश के युवाओं को विनाश की ओर धकेल रहा चीनः मिस्बाह

बांग्लादेश के इस्लामी चिंतक एवं बांग्लादेश इस्लामी एकता गठबंधन के अध्यक्ष मिस्बाह-उर-रहमान ने हिन्दुस्थान समाचार से बातचीत में कहा कि धार्मिक मूल्य बोध एवं बंगालियों की अपनी संस्कृति से दूर हटने का यह दुष्परिणाम है कि आज हमारा युवा वर्ग नैतिक पतन की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश के सारे लोगों को मार डालने से भी यदि चीन को आर्थिक लाभ हो तो वह ऐसा करने में नहीं हिचकिचाएगा। उन्होंने कहा कि चीनी उत्पादों के दुष्प्रभावों से नई पीढ़ी को बचाने के लिए हमें अपनी संस्कृति और सभ्यता पर भरोसा करना होगा। आधुनिकता के नाम पर मयार्दा की सारी हदें तोड़ने के बजाये हमें अपनी मूल संस्कृति की ओर वापस लौटना होगा। जहां तक चीन की बात है तो वह बांग्लादेश की अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण के साथ-साथ यहां की युवा पीढ़ी को विनाश की ओर धकेलना चाहता है।

मोबाइल एप एवं सोशल मीडिया के जरिये प्रचार-प्रसार: अशरफ

बांग्लादेश सीआईडी के साइबर इन्वेस्टिगेशन एंड ऑपरेशंस सुपरिंटेंडेंट एस एम अशरफ-उल-आलम का कहना है कि प्रतिबंधित चीनी उत्पाद विभिन्न वेबसाइटों के जरिए बेचे जा रहे हैं। सोशल मीडिया पर उत्पादों के लिए बाजार बनाया जा रहा है। लाइकी, टिक टॉक जैसे मोबाइल ऐप के माध्यम से क्लोज ग्रुप बनाकर होटल, रेस्तरां एवं डीजे पार्टियों में उत्पाद बेचे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश का प्रशासन इन गतिविधियों पर लगाम लगाने की पूरी कोशिश कर रहा है और इसके लिये तमाम तरह के सख्त कदम उठाये जा रहे हैं।

प्रतिबंधित उत्पादों का आयात रोकना जरूरी: तन्मय

बांग्लादेश की एक संवाद संस्था से जुड़े सीनियर क्राइम रिपोर्टर हिदूज्जमान तन्मय ने बांग्लादेश में चीनी उत्पादों की आमदनी रोकने पर बल देते हुए कहा, ह्यप्रतिबंधित उत्पाद अमूमन ढाका के हजरत शाह जलाल हवाई अड्डा एवं चट्टग्राम बंदरगाह के जरिए बांग्लादेश लाये जाते हैं। कभी खिलौनों में तो कभी त्यौहारों पर इस्तेमाल होने वाले उत्पादों में छुपा कर सेक्स टाय एवं वियाग्रा जैसी चीजें बांग्लादेश के बाजारों में फैलाई जा रही है। इसमें कस्टम विभाग के कुछ भ्रष्ट अधिकारियों की मिलीभगत भी है। बांग्लादेश में इन उत्पादों का आयात रोकने के लिये कस्टम को दुरुस्त करने के साथ सभी खुफिया एजेंसियों को सक्रिय होना होगा। उन्होंने कहा कि सिर्फ एक-दो खुदरा व्यापारियों को गिरफ्तार करने से इस गोरखधंधे को बंद नहीं किया जा सकता अपितु ऐसे उत्पादों को बांग्लादेश की सीमा में प्रवेश रोकना होगा।

प्रशासन को और कठोर रुख अख्तयार करने की जरूरत: समशुल

बांग्लादेश के गृह मंत्रालय से संबंधित संसद की स्थायी समिति के अध्यक्ष शमसुल हक टुकु कहते हैं कि प्रतिबंधित उत्पाद झूठे तथ्य देकर आयात नहीं किये जा सकें, इसके लिए प्रशासन को और कठोर रुख अख्तियार करना होगा। सेक्स टाय एवं वियाग्रा जैसे उत्पाद युवा वर्ग को पतन की ओर ले जा रहे हैं।

कोविड से मुकाबले में बढ़ा चिकित्सकीय कचरे का बोझ, डब्ल्यूएचओ चिंतित

काबुल। अफगानिस्तान पुनर्निर्माण के लिए अमेरिकी सरकार के विशेष महानिरीक्षक(एसआईजीएआर) ने कहा है कि युद्धग्रस्त राष्ट्र वर्तमान में चल रहे मानवीय संकट और ढहती अर्थव्यवस्था के बीच 'भूख की सुनामी' का सामना कर रहा है। गुरुवार को, एसआईजीएआर ने अफगानिस्तान में 145.87 अरब डॉलर के पुनर्निर्माण के प्रयासों की जांच करते हुए अमेरिकी कांग्रेस को अपनी 44वीं तिमाही रिपोर्ट जारी की, जिसमें कहा गया है कि "रिकॉर्ड सूखा, बढ़ती खाद्य कीमतें, आंतरिक विस्थापन" के साथ-साथ आर्थिक रूप से कमजोर और सार्वजनिक सेवाओं का पतन एक मानवीय आपतकाल है। प्राधिकरण ने मानवीय मामलों के समन्वय के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के तहत सक्रिय एक

संगठन, एकीकृत खाद्य सुरक्षा चरण वर्गीकरण के निष्कर्षों को रेखांकित किया, जिसमें कहा गया था कि लगभग 19 मिलियन अफगानों ने सितंबर और अक्टूबर 2021 में तीव्र खाद्य असुरक्षा का अनुभव किया। एकीकृत खाद्य सुरक्षा चरण वर्गीकरण की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस सर्दी में लगभग 22.8 मिलियन अफगान संभावित रूप से जानलेवा भूखमरी के स्तर पर होंगे, जिनमें से 8.7 मिलियन अकाल की स्थिति का सामना करेंगे। "डब्ल्यूएचओ और डब्ल्यूएफपी का अनुमान है कि पांच साल से कम उम्र के 3.2 मिलियन अफगान बच्चे इस सर्दी में तीव्र कुपोषण से पीड़ित होंगे, जिसमें दस लाख के मरने का खतरा होगा।" सिगार ने सितंबर 2021 में जारी संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) की रिपोर्ट का हवाला दिया जिसमें कहा गया था कि बिगड़ते राजनीतिक और आर्थिक संकटों के परिणामस्वरूप अफगानिस्तान की 97 प्रतिशत आबादी के 2022 के मध्य तक गरीबी रेखा से नीचे खिसकने का खतरा था। सिगार के अनुसार, अमेरिका अफगानिस्तान को सबसे बड़ा मानवीय सहायता दाता बना हुआ है। "जनवरी 2022 तक, अमेरिका अफगानिस्तान में और इस क्षेत्र में अफगान शरणार्थियों के लिए मानवीय सहायता में 782 मिलियन डॉलर प्रदान कर चुका है।"

सैन्य अभ्यास के नाम पर बेलारूस की तरफ से यूक्रेन को घेर रहा रूस, 30 हजार सैनिक भेजे

ब्रसेल्स। रूस लगातार यूक्रेन पर दबाव बढ़ाता जा रहा है। उसने पहले से यूक्रेन सीमा पर 1,20,000 सैनिकों को तैनात किया है, अब वह पड़ोसी देश बेलारूस की तरफ से भी घेरने की तैयारी कर रहा है। इसके लिए रूस ने सैन्य अभ्यास की आड़ में 30 हजार सैनिक बेलारूस भेजे हैं। दोनों देशों का सैन्य अभ्यास 20 फरवरी तक चलना है। यह बात नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) ने कही। अमेरिका ने आशंका जताई है कि इस महीने के अंत में रूस यूक्रेन पर हमला कर सकता है। उधर, रूस ने यूक्रेन पर हमले की योजना से इनकार किया है, लेकिन वह अमेरिका से यूक्रेन को नाटो में शामिल नहीं करने का स्पष्ट आश्वासन चाहता है। अमेरिका ने ऐसा कोई आश्वासन देने से इनकार कर दिया है। अमेरिका ने पूर्वी और मध्य यूरोप से नाटो के हथियारों की तैनाती हटाने की रूस की एक अन्य मांग को मानने से भी इनकार कर दिया है। नाटो अमेरिका के नेतृत्व वाला सैन्य संगठन है, जिसमें 29 अन्य देश शामिल हैं। नाटो के महासचिव जेंस स्टोल्टेनबर्ग ने कहा कि हाल के कुछ दिनों में हमने पाया है कि बेलारूस में रूसी सैनिकों की संख्या और गतिविधियां बढ़ी हैं। इस दौरान रूस ने विशेष कार्रवाई के लिए प्रशिक्षित 30 हजार सैनिक, एसयू-35 लड़ाकू विमान, एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम और परमाणु हमला करने में सक्षम स्कैंडर मिसाइलें बेलारूस भेजी हैं। शीत युद्धकाल के बाद रूस ने बेलारूस में पहली बार इतने सैनिक और सैन्य साजो-सामान भेजा है। रूसी रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगू ने गुरुवार को बेलारूस जाकर रूस और बेलारूस के सैनिकों के संयुक्त अभ्यास का निरीक्षण किया। उन्होंने बेलारूस के राष्ट्रपति एलेक्जेंडर लुकाशेंको से भी मुलाकात की। रूस की सैन्य तैनाती खत्म करने की मांग के विपरीत अमेरिका ने गुरुवार को तीन हजार सैनिकों की पोलैंड और रोमानिया में तैनाती का एलान किया। दोनों ही देश पूर्व सोवियत देश हैं और अब नाटो में हैं। दोनों ही देश रूस के नजदीक हैं। वहां पर सैन्य तैनाती से रूस का बेचैन होना स्वाभाविक है। तुर्की राष्ट्रपति मध्यस्थता के लिए यूक्रेन पहुंचे इस बीच तुर्की के राष्ट्रपति तैयप एर्दोगन विवाद में मध्यस्थता के उद्देश्य से गुरुवार को यूक्रेन पहुंचे हैं। जिसके बाद वो मास्को में राष्ट्रपति पुतिन से भी मिलेंगे। नाटो में शामिल तुर्की के राष्ट्रपति एर्दोगन के रूस और यूक्रेन से अच्छे संबंध माने जाते हैं।

विश्व में 10 अरब से अधिक लोगों का हुआ कोविड टीकाकरण

वाशिंगटन। विश्व में कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप के बीच 10 अरब से अधिक लोगों का कोविड टीकाकरण हुआ है और 38 करोड़ से अधिक लोग इससे प्रभावित है। अमेरिका की जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के कोरोना वायरस रिसोर्स सेंटर की ओर से जारी आंकड़ों के मुताबिक दुनिया भर में अब तक 10.15 अरब से अधिक वैक्सीन की डोज दी जा चुकी है। विश्व में कोरोना संक्रमितों की कुल संख्या बढ़कर 38,45,17,912 हो गयी है और मृतकों का आंकड़ा बढ़कर 56,99,697 हो गया हैं। दुनिया भर में कोरोना संक्रमण के सबसे अधिक मामलों के साथ अमेरिका शीर्ष पर है, जहां इस महामारी से अभी तक 7.56 करोड़ से ज्यादा लोग प्रभावित हुए हैं और 8,94,211 लोग काल के गाल में समा चुके हैं। भारत इस महामारी के संक्रमण के मामले में दूसरे स्थान पर है, जहां पिछले 24 घंटों में बुधवार सुबह तक कोविड संक्रमण के एक लाख 72 हजार 433 नये मरीज सामने आये हैं। देश के कोरोना सक्रिय मामलों की कुल संख्या 15 लाख 33 हजार 921 हो गयी है। यह संक्रमित मामलों का 3.67 प्रतिशत है। दैनिक संक्रमण दर 10.99 प्रतिशत हो गयी है। अभी तक कुल तीन करोड़ 97 लाख 70 हजार 414 लोग कोविड से उबर चुके हैं। स्वस्थ होने की दर 95.14 प्रतिशत है। वहीं इस दौरान 1008 लोगों की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा बढ़कर 4,98,983 हो गया है। देश में इस समय मृत्यु दर 1.19 प्रतिशत है। संक्रमण के मामले में ब्राजील तीसरे स्थान पर आ गया है। देश में अब तक 2.58 करोड़ से अधिक लोग कोरोना वायरस की जद में आ चुके हैं और यह वायरस अभी तक 6,29,301 लोगों की जान ले चुका है। फ्रांस संक्रमण के मामले में चौथे पायदान पर है। देश में अब तक करीब दो करोड़ से ज्यादा लोग इस जानलेवा वायरस से संक्रमित हो चुके हैं और 1,32,591 लोगों की मौत हुई है। कोरोना संक्रमण के मामले में ब्रिटेन पांचवें स्थान पर है, जहां अभी तक करीब 1.76 करोड़ लोग इस महामारी से प्रभावित हो चुके है जबकि मृतकों का आंकड़ा 1,57,938 तक पहुंच गया है। तुर्की ने कोरोना संक्रमण के मामले में रूस को पीछे छोड़ दिया है और यह छठे पायदान पर है, जहां अभी तक करीब 1,18,33,165 लोग संक्रमित हुए हैं और इस महामारी से 87,831 लोगों की जान जा चुकी है। रूस कोरोना संक्रमण के मामले में सातवें पायदान पर खिसक गया है। देश में इस महामारी से 1,19,36,064 लोग प्रभावित हो चुके हैं और अब तक 3,25,986 लोग जान गंवा चुके हैं। मृतकों के मामले में रूस चौथे स्थान पर है। इटली में संक्रमितों की कुल संख्या 1.23 करोड़ के पार पहुंच गयी है और यह आठवें स्थान पर है। देश में मृतकों का आंकड़ा 1,47,320 तक पहुंच गया है। स्पेन संक्रमितों के मामले में नौवें पायदान पर है जहां इस महामारी से अभी तक 10.12 लाख से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं और 93,857 लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा हैं। जर्मनी में वैश्विक महामारी से अभी तक 10.30 लाख से ज्यादा लोगों के प्रभावित होने से यह दसवें पायदान पर है। देश में मृतकों का आंकड़ा 1,18,219 तक पहुंच गया है। भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान में 14.42 लाख से अधिक लोग कोरोना संक्रमण की जद में आ चुके हैं और इस महामारी से वहां 29,372 लोगों की मौत हो गई है।

एफबीआई ने किया पेगासस की क्षमता का परीक्षण

वाशिंगटन। अमेरिका के फेडरल ब्यूरो ऑफ इनवेस्टिगेशन (एफबीआई) ने यह पुष्टि की है कि इजरायल की कंपनी एनएसओ के पेगासस स्पाईवेयर के इस्तेमाल का लाइसेंस है और उसने इस सॉफ्टवेयर की क्षमता का परीक्षण किया है। वाशिंगटन पोस्ट में प्रकाशित खबर के अनुसार एफबीआई ने स्पष्ट किया है कि इस सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल किसी भी जांच में मदद के लिए नहीं किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक एफबीआई और कानून मंत्रालय के बीच इस बात को लेकर चर्चा हुई है कि ब्यूरो पेगासस को कैसे इस्तेमाल करेगा। पेगासस के जरिये फोन को गुपचुप तरीके से हैक करके उसके कैमरा और माइक्रोफोन तथा फोन में मौजूद कॉन्टैक्ट, मैसेज आदि तक पहुंच स्थापित कर लेता है। इस रिपोर्ट पर टिप्पणी करते हुए द वर्ज ने कहा कि यह चिंताजनक बात है। एनएसओ ने हमेशा यह दावा किया है कि पेगासस का इस्तेमाल प्लस1 कंट्री कोड वाले फोन नंबर पर नहीं किया जा सकता है और इसे सिर्फ अमेरिका के बाहर के देशों में इस्तेमाल किये जाने की उम्मीद है। एफबीआई ने एनएसओ के साथ 5 मिलियन डॉलर के बिल और पेगासस का करार दोबारा करने के संबंध में लगाये गये आरोपों की पुष्टि नहीं की है।एनएसओ समूह को देश में स्थित अन्य टेक कंपनियों के साथ कारोबार करने के कारण अमेरिकी सरकार ने ब्लैकलिस्ट किया हुआ है। टेक कंपनी एप्पल ने नवंबर 2021 में एनएसओ के खिलाफ मामला दर्ज कराया और उसके एप्पल के सॉफ्टवेयर, सर्विस और उपकरण पर रोक लगाने की मांग की।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
211019 से प्रकाशित
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम् योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506

यूक्रेन के राष्ट्रपति, नीदरलैंड के प्रधानमंत्री ने सहयोग, क्षेत्रीय सुरक्षा पर बात की

कीव। यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की और नीदरलैंड के प्रधानमंत्री मार्क रूट ने द्विपक्षीय सहयोग और क्षेत्रीय सुरक्षा पर चर्चा करने के लिए मुलाकात की। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, अपनी बातचीत के बाद एक संयुक्त बयान में, जेलेंस्की और रूट ने आपसी हित के सभी क्षेत्रों में व्यापक द्विपक्षीय साझेदारी को विकसित करने और आगे बढ़ाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। दोनों नेताओं ने परिपत्र अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य देखभाल, जल और अपशिष्ट प्रबंधन, नवीकरणीय ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और अंतदेर्शीय जलमार्ग के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के अवसरों पर प्रकाश डाला। दोनों पक्षों ने यूक्रेन और उसके आसपास संकट के शांतिपूर्ण समाधान के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि कूटनीति शांति प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रुट ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सीमाओं के भीतर यूक्रेन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए अपने देश के समर्थन को दोहराया।रूट ने कहा कि नीदरलैंड यूक्रेन को तकनीकी साइबर सहायता प्रदान करने के लिए तैयार है और डोनबास संघर्ष में घायल हुए यूक्रेनी सैनिकों को पुनर्वास देखभाल के साथ प्रदान करना जारी रखेगा। अपनी बातचीत के बाद संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में, जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेन अपनी रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने के लिए कदम उठा रहा है, यह देखते हुए कि अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों द्वारा यूक्रेन को प्रदान किए गए हथियार सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं,

बॉरिस जॉनसन से सांसद मांग रहे इस्तीफा, दबाव में

नई दिल्ली। बोरिस जॉनसन के खिलाफ कंजर्वेटिव सांसदों ने नो कांफिडेंस पत्र सौंपे हैं, जिससे उनपर इस्तीफा देने का दबाव बढ़ गया है। द गार्जियन ने यह जानकारी दी।हताश प्रयासों के बावजूद जॉनसन की स्थिति अभी भी खतरे में है, तीन और सांसदों ने सार्वजनिक रूप से प्रधानमंत्री को इस्तीफा देने के लिए कहा है। द गार्जियन को एक अन्य बैकबेंच सांसद के बारे में बताया गया है जिन्होंने निजी तौर पर एक पत्र जमा किया है।